ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 27 जनवरी 2019

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 27 जनवरी 2019 से 02 फरवरी 2019

माघ कृ. – 07 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 61, अंक 04, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में नया सत्र यज्ञ से आरम्भ

नववर्ष के नए सेमेस्टर के प्रथम दिन हंसराज महिला महाविद्यालय में परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उप–प्रधान डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली एवं चेयरमैन स्थानीय समिति जस्टिस श्री एन.के. सूद व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अरूणिमा सूद बतौर मुख्यातिथि उपस्थित थे। प्राचार्या प्रो. डॉ. श्रीमती अजय सरीन ने उनका स्वागत किया। प्राचार्या, टीचिंग व नॉन–टीचिंग स्टाफ सदस्यों ने यज्ञशाला में यज्ञ करके परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्राचार्या ने अपने सम्बोधन में प्रधान डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी की शुभकामनाएँ स्टाफ सदस्यों तक पहुँचाई। उन्होंने कहा कि ईश्वर से हमारी प्रार्थना है कि हम हर बार की तरह इस बार भी नए कीर्तिमान स्थापित करते रहें व मेहनत करते हुए सभी की आशा पर खरे उतरें।

उन्होंने कहा कि मानव तो हम हैं, पर मानव से मानवता की ओर जाने की यात्रा अद्भुत है। हमें अपना हित न सोचते हुए संस्थान के हित के लिए प्रयासरत् रहना चाहिए।

रिटायर्ड जस्टिस श्री एन.के.सूद ने कहा कि बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हमें छोटे लक्ष्य बनाने चाहिए। उन्होंने पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी द्वारा 6 जनवरी को दिल्ली में रिलीज़ किये गये, पलैनर 2019 की कमेटी को भी बधाई दी। प्राचार्या डॉ. श्रीमती अजय सरीन ने डीन पब्लिकेशन व उनकी टीम को बधाई दी।

आर्य समाज (अनारकली) में निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर

आर्य समाज (अनारकली) में "आनन्द आरोग्य मंदिर" नामक मेडीकल सैन्टर के सौजन्य से जनता की सेवा हेतु निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन "आनन्द आरोग्य मन्दिर" के भवन में प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक किया गया।

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति व आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी के नेतृत्व व प्रोत्साहन से आनन्द आरोग्य मन्दिर की पूरी टीम द्वारा शिविर को सफल बनाने के लिए तीन सप्ताह पूर्व प्रचार किया गया।

शिविर में लगभग 570 मरीज़ आये तथा उन्हें दो से तीन दिन की दवाईयाँ मुफ्त बांटी गई। आर्य समाज के कर्मठ व ओजस्वी कार्यकारी प्रधान श्री अजय सूरी, मंत्री ब्रिगेडियर ए.के. अदलखा, सहमंत्री श्रीमती स्नेह मोहन व ईला आनन्द जो कि आनन्द आरोग्य मंदिर की मेडिकल अधीक्षक हैं, के सफल नेतृत्व तथा प्रभु के आशीर्वाद से शिविर ने सफलता की नई ऊचाँइयों को प्राप्त किया।

डी.ए.वी. के उपप्रधान श्री प्रबोध महाजन ने "डाबर" कम्पनी के सौजन्य से सभी मरीज़ों को मुफ्त एक किलोग्राम च्यवनप्राश बाँटने के लिए लगभग 4000 डिब्बों का इंतजाम किया। स्वास्थ्यवर्धक च्यवनप्राश पाकर आये हुए सभी मरीज़ बहुत प्रसन्न हुए।

डॉ. हरिवंश कुमार अरोड़ा ने शारीरिक जाँच, डॉ. बोबिन सलूजा दंत चिकित्सक, डॉ. लता नेत्र विशेषज्ञ, डॉ. अभिषेक ओमचारी चर्म रोग विशेषज्ञ, डॉ. अंगद कोचर मनोरोग चिकित्सक तथा डॉ. अमित जग्गी बाल विशेषज्ञ ने मरीज़ों का निरीक्षण सेवा भाव से किया।

भविष्य में इस प्रकार के सफल निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविरों का आयोजन, आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लिए सबने दृढ़ संकल्प लिया।

डी.ए.वी. पीतमपुरा में चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

आर्यसमाज दरबारी लाल डी.ए.वी. मॉडल स्कूल पीतमपुरा में युवाओं के चारित्रिक निर्माण हेतु विद्यार्थियों में जीवन कौशल के विकास के लिए नृत्य, गीत, संगीत, अभिनय, भाषण आदि से सम्बद्ध कार्यक्रम आयोजित किए गए। साप्ताहिक यज्ञ व प्रार्थना सभा में भी नैतिक मूल्यों की चर्चा हुई और प्रेरक प्रवचन हुए।

विद्यालय में पाँच सदन हैं जिनमें वर्ष भर अनेक गतिविधियाँ होती हैं। इनके अन्तर्गत विद्यार्थियों की नेतृत्व क्षमता को उभारने का प्रयास किया गया। विद्यालय में वर्ष भर के त्योहारों पर उनसे संबधित कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें पोस्टर निर्माण, आशु भाषण प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक करवाए गए।

अन्तः कक्षा प्रतियोगिता के अर्न्तगत पोस्टर निर्माण विज्ञापन निर्माण व वाद–विवाद आदि का आयोजन किया गया। स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से भी विद्यार्थियों को दीपावली के अवसर पर महर्षि दयानन्द से सम्बद्ध कार्यक्रम दिखाए गए व प्रार्थना सभा में भी महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला गया। यज्ञ के अन्तर्गत विद्यार्थियों को प्रेरक वचन सुनाए गए और त्याग, तपस्या, संयम आदि मूल्यों को आचरण में ढालने पर बल दिया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 27 जनवरी 2019 से 02 फरवरी 2019

जीवन-यज्ञ अविच्छिन्न रहे

● **डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

घृतस्य जूतिः समना सदेवा, संवत्सरं हविषा वर्धयन्ती।
श्रोत्रं चक्षुः प्राणोऽच्छिन्नो नो अस्तु, अच्छिन्ना वयमायुषो वर्चसः।।
अथर्व 16.58.1

ऋषिः **ब्रह्मा।** देवता **यज्ञः।** छन्दः **त्रिष्टुप्।**

● (**घृतस्य**) आत्मतेज–रूप घृत की (**जूतिः**) वेगवती धारा (**समना**) मन–सहित [और] (**सदेवा**) इन्द्रियों–सहित (**संवत्सरं**) शत–संवत्सर जीवन –यज्ञ को (**हविषा**) हवि से (**वर्धयन्ती**) बढ़ाती [रहे]। (**नः**) हमारा (**क्षोत्रं**) क्षोत्र, (**चक्षुः**) नेत्र [और] (**प्राणः**) प्राण (**अच्छिन्नः अस्तु**) अच्छिन्न रहे। (**वयं**) हम (**आयुष**) आयु से [तथा] (**वर्चसः**) वर्चस्विता से (**अच्छिन्नाः**) अच्छिन्न [रहें]।

● मनुष्य का जीवन सौ या सौ से भी अधिक वर्ष तक चलनेवाला एक यज्ञ है, जिसे 'शत–संवत्सर यज्ञ' भी कहा है जाता है। हम चाहते हैं कि हमारा यह यज्ञ निर्विघ्न चलता रहे। जैसे बाह्य यज्ञ तभी प्रवृत्त रह सकता है, जब उसमें यजमान और ऋत्विजों द्वारा निरन्तर हवि की आहुति पड़ती हे, वैसे ही हमारे इस शरीर यज्ञ के निर्बाध चलते रहने के लिए भी यह आवश्यक है कि इसका यजमान और इसके ऋत्विज् इसे हवि द्वारा बढ़ाते रहें। आत्मा ही इस का 'यजमान' है, मन 'ब्रह्म' है, प्राण 'उद्गाता' है, वाणी 'होता' है चक्षु 'अध्वर्यू' है। अतः आत्मा की आत्म–तेज–रूप घृत की आहुति, मन की प्रबल संकल्प की आहुति और सब ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मेन्द्रयों की अपनी–अपनी ज्ञान–कर्म–रूप हवियों की आहुति हमारे इस 'शत–संवत्सर' जीवन–यज्ञ में पड़ती रहनी चाहिए। यदि आत्मा, मन और इन्द्रिय–देव इस यज्ञ में सहायक नहीं होंगे,तो हमारा यह जीवन – यज्ञ समय पूर्व ही विच्छिन्न हो जाएगा। अतः हमारे क्षोत्र, नेत्र, प्राण आदि की शक्तियाँ प्रअक्षुण्ण रहनी चाहिएँ, जिससे हम चिर–काल तक कानों से शब्द, नेत्रों से रूप, नासिका से गन्ध, रसना से रस, त्वचा से स्पर्श का ग्रहण कर सकें और प्राण–अपना आदि की क्रियाओं को सम्यक् प्रकार से करते रहें। यदि हमारी ये इन्द्रियाँ दुर्बल, या अशक्त हो जाती हैं तो हमारे जीवन की वही अवस्था होगी, जो ऋत्विजों के दुर्बल, अशक्त या उदासीन हो जाने पर यज्ञ की होती है। यदि आयु से तथा वर्चस्विता से अच्छिन्न रहना चाहते हैं, तो हमें अपने जीवन–यज्ञ के यजमान और ऋत्विजों को सबल, सशक्त और निरन्तर जागरूक रखना होगा।

हे मेरे आत्मन्! हे मन! हे प्राण! हे इन्द्रिय–देवो! तुम जागते रहो, जीवन–यज्ञ में हवि डालते रहो, यज्ञ को प्रज्वलित, प्रवृद्ध, अच्छिन्न तथा वर्चस्वी बनाये रहो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

यज्ञ प्रसाद

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

इस अंक से "यज्ञ प्रसाद" शीर्षक से प्रकाशित महात्मा आनन्द स्वामी जी की एक अन्य पुस्तक आरम्भ करने जा रहे हैं। बहुत समय से अप्राप्त इस पुस्तक में यज्ञ की अनेक शिक्षाओं का विवेचन किया है। पुस्तक के विषय हैं–यज्ञ द्वारा प्रभु की स्तुति, महर्षि के शब्दों में – यज्ञ का स्वरूप, यज्ञ–जनता के सुख के लिए, यज्ञ केवल कर्मकाण्ड नहीं, यज्ञ परिधि में कर्म, ज्ञान, उपासना – तीनों, महाभारत के पाँच महान् यज्ञ, जीवन व्यापी 16 यज्ञमय संस्कार और दैनिक पंचमहायज्ञ, गीता का यज्ञ चक्र, यज्ञ का धात्वर्थ, जीवन यज्ञमय बनाओ, यज्ञों के विविध रूप, तीन ऋणों से मुक्ति का उपाय, ज्ञान यज्ञ की रूपरेखा, उपासना यज्ञ, यज्ञ की अग्नि–शिखाएँ प्रेरणा का स्रोत, यज्ञ–याग से बह्मदर्शन इत्यादि। यह पुस्तक प्रत्येक धर्मानुयायी के लिए पठनीय और संग्रहणीय है।

हमारा विश्वास है कि यह आर्य जगत् के सुधी पाठकों को रूचिकर लगेगी।

यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् सब उपस्थित देवियों और सज्जनों ने सम्मिलित स्वर के साथ यह भजन गया –

यज्ञरूप प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए,
छोड़ देवें छल–कपट को, मानसिक बल दीजिए।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें,
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक–सागर से तरें।
अश्वमेधादिक रचाएँ यज्ञ पर–उपकार को,
धर्म–मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को।
नित्य श्रद्धा–भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें,
रोग–पीड़ित विश्व के संताप सब हरते रहें।
कामना मिट जाय मन से पाप–अत्याचार की,
भावनाएँ पूर्ण होवें यज्ञ से नर–नार की।
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए,
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गंध को धारण किये।
स्वार्थभाव मिटे हमारा, प्रेम – पथ विस्तार हो,
'इदन्न मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।
प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे,
नाथ करुणारूप! करुणा आपकी सब पर रहे।

इसके बाद माता निर्मला जी और उनकी सहेलियों ने मिलकर यज्ञ की महत्ता के सम्बन्ध में यह सुन्दर भजन गया –

देखो उपकार महर्षि स्वामी का।
यह हवन हुआ जो भारी, उसकी है कृपा सारी,
सुगन्धित हो गए द्वार, देखो उपकार...।।
मंत्रों का हुआ उच्चारण, पड़ी ओषधि रोग–निवारण,
ओम् को रहे पुकार, देखो उपकार...।।
नित पंच यज्ञ का करना, यह स्वामी जी ने वरना।
यही जीवन का सार, देखो उपकार...।।
नहीं नित्य कर्म जाने थे, न्हाने से मुक्ति माने थे,
भ्रम में था संसार, देखो उपकार...।।
हवनों का करना छूटा, भारत का नसीबा फूटा,
होते हैं दुःख अपार, देखो उपकार...।।
यह वासुदेव गाता है, जड़ पूजा छुड़वाता है,
हवन का करो प्रचार, देखो उपकार...।।

इसके बाद पूज्य महात्मा श्री आनन्द स्वामी सरस्वती जी महाराज का प्रवचन यज्ञ की महिमा के सम्बन्ध में प्रारम्भ हुआ–

पूज्य महात्मा श्री आनन्द स्वामी जी का प्रवचन

मेरी प्यारी माताओ और सज्जनो! अभी आपने पवित्र वेदमन्त्रों द्वारा यज्ञ की पावन अग्नि में आहुतियाँ दी हैं। यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा गया है क्योंकि इससे इहलोक और परलोक दोनों में सुख–आनन्द प्राप्त होता है।

एक समय की बात है। याज्ञवल्क्य ऋषि, महाराज जनक के पास बैठे हुए थे। राजा ने पूछा– "भगवन्! यज्ञ का लौकिक लाभ साक्षात् नजर आता है। इससे जलवायु वनस्पति इत्यादि पवित्र और रोग–रहित होते हैं, ओषधि अन्न तथा वृक्ष–लता–पौधों को शक्ति मिलती है, हानिकारक कीटाणुओं का नाश होता है, पर पारलौकिक लाभ क्या होता है, यह मेरी समझ में नहीं आता। ऋषिवर! मेरी यह शंका कृपा कर निवारण करें।"

मुनि याज्ञवल्क्य ने जनक महाराज को उत्तर दिया–राजन्! हवनकुण्ड की पावन अग्नि में जो आहुतियाँ दी जाती हैं, अग्नि उनके सूक्ष्म रूप बना देती है। पहला–हवनकुण्ड में प्रदत्त समूची सामग्री, घृत, समिधा इत्यादि को सूक्ष्म रूप देकर समस्त वायुमण्डल में फैला देती है। दूसरा वह रूप है जो आहुति देनेवालों और यज्ञवेदी पर उपस्थित व्यक्तियों के हृदय–पटल पर

सूक्ष्माति–सूक्ष्म रूप में प्रविष्ट कर जाता है। श्रद्धा, भक्ति और तन्मयता से दी गई आहुतियाँ सबके हृदय–मन्दिर में, चुपचाप और स्वतः प्रवेश पा जाती हैं। इससे मन के कलुपित विचारों का निष्कासन और पुनीत भावनाओं का उद्‌भव होना प्रारम्भ हो जाता है।

इसीलिए शास्त्रकार ब्रह्मचारी, गृहस्थी और वानप्रस्थी के लिए दैनिक यज्ञ का आदेश देते हैं। संन्यासी इससे मुक्त कर दिया गया है, क्योंकि इस तुरीय आश्रम में प्रविष्ट हो वह सर्वतोभावेन अपने को ब्रह्माग्नि में अर्पित कर देता है।

श्रद्धा, प्रेम और भक्ति से प्रदत्त आहुतियाँ धर्म का रूप धारण कर लेती हैं। अन्तकाल में जब सूक्ष्म शरीर के साथ आत्मा अपने कर्मानुसार इस भौतिक देह को छोड़ता है, तो धार्मिक संस्कार से बनी हुई ये आहुतियाँ सूक्ष्म शरीर को अपने में आविष्ट कर लेती हैं। सूक्ष्म शरीर के साथ जब आत्मा इस संसार से प्रस्थान करता है, तब कौन है जो इसकी सहायता के लिए अग्रसर होता है? मनु भगवान् के शब्दों में–

नामुत्र हि सहायार्थं पिता माता
च तिष्ठतः।
न पुत्रदारा न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलः।।
एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एकोऽनुभुंक्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम्।।
मृतं शरीरमुत्मृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ।
विमुखा बान्धवा यान्ति
धर्मस्तमनुगच्छति।।

(4/231–241)

अन्यत्र भी कहा है –

द्रव्य भूमौ पशवश्च गोष्ठे, नारी गृहद्वारि
जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोकमार्गे धर्माऽनुगो
गच्छति जीव एकः।।

अर्थ– अन्तकाल आने पर धन भूमि पर, पशु इत्यादि अपने बाड़े में, पत्नी घर के द्वार तक, अन्य लोग शमशान–भूमि *तक और देह चिता पर* – ये सब इस प्रकार यहाँ रह जाते हैं। परलोक में केवल धर्म ही साथ जाता है। वहाँ पर सहायता के लिए माता–पिता, पुत्र, पत्नी कोई नहीं जाता, केवल धर्म ही साथ देता है। प्राणी अकेला ही संसार में आता और अकेला ही यहाँ से जाता है। अपने अच्छे और बुरे कर्मों का अकेला ही फल भोगता है। सूखी लकड़ी व मिट्‌टी के ढ़ेले के समान मृत शरीर को छोड़कर सब बन्धु–बान्धव चले जाते हैं, केवल धर्म ही साथ देता है।

यज्ञ हमें निरन्तर शिक्षा देता है कि इसमें डाली हुई प्रत्येक आहुति–सामग्री, घी, समिधा, मिष्ठान्न इत्यादि के रूप में– अग्नि में भस्म हो जाती है, केवल सुगन्धि और आकाश में उड़ता यज्ञ–धूम शेष रह जाता है। इसी प्रकार इस विश्वव्यापी महान् यज्ञशाला में हम सबके ये स्थूल और भौतिक शरीर आहुति के सदृश हैं। काल की प्रचंड अग्नि इन्हें निरन्तर भस्म कर रही है। इससे कोई बच नहीं सकता। यदि हमने जीवन में श्रेष्ठ कर्म किये हैं, धर्म का पालन किया है, तब तो हमारी आत्मा अन्तकाल में अपने में आनन्दरूपी सुगन्धि लेता जाएगा, और यदि हमने सारा जीवन पाप और भोग–विलास में विष्ट किया है, तो इसके भीतर क्लेश की दुर्गन्धि के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं रहेगा। इसलिए मानव को प्रतिक्षण अपना जीवन यज्ञमय बनाना चाहिए और मृत्यु को सदा स्मरण रखना चाहिए। पता नहीं किस क्षण, किस घड़ी और कहाँ मृत्यु हमारा गला दबोच ले! तनिक भी प्रमाद और अभिमान हमें शोक–सागर में गिरा देगा। एक घटना याद आ गई –

रावलपिंडी से कश्मीर जाने के लिए उस समय मोटरें नहीं चली थीं। ताँगे ही जाते थे। एक सेठ ने ताँगेवाले से कहा, "क्यों भाई, कश्मीर जाना है, कितना किराया लोगे?"

ताँगेवाले ने देखा – धनी पुरुष है, इससे फायदा उठाना चाहिए। बोला, "सेठजी, किराया क्या देना है, ताँगे और घोड़े का जो खर्च आएगा, वह दे देना। घोड़े को चारा दिलवा देना और आवश्यकता पड़े तो ताँगे की मरम्मत करा देना।"

सेठ ने दिल में सोचा–यह सस्ता सौदा है। बोला, "ठीक है, चलो।"

सेठ बैठ गया। ताँगा चला। पहला पड़ाव आया, कोहमरी। ताँगेवाले ने कहा – "सेठजी! आप रईस और प्रतिष्ठित पुरुष हैं। ताँगे की गद्दियाँ पुरानी हो गई हैं। आपकी शान के लायक नहीं है। यदि आप कहें तो इस पड़ाव पर दो दिन रुककर गद्दियाँ बदलवा लें।"

सेठ ने कहा – "अवश्य बदलवा लो।" और रुपये दे दिये। फिर ताँगे का रोगन खराब लगा। ताँगेवाले ने नया रोगन कराने के लिए कहा। सेठ ने रुपये दे दिये और नया रोगन होने लगा। दो दिन की जगह 10–12 दिन लग गए क्योंकि आकाश में बादल छाने के कारण रंग–रोगन सूखता नहीं था।

अन्य यात्री लोग सेठ की इस मन्द बुद्धि पर हँस रहे थे।

कुछ दिन बाद रंग–रोगन सूख गया। अगले दिन प्रातः यात्रा करना निश्चित हुआ। रात को तूफान आ गया। रंग–रोगन सब उड़ गया। ताँगेवाले ने कहा – "सेठ जी, यह पहाड़ी इलाका है। बार–बार तूफान – वर्षा होती है। अगर ताँगे और घोड़े के लिए कोई मकान हो तो रंग–रोगन खराब नहीं होगा और फिर श्रीनगर की यात्रा भली–भाँति हो सकेगी।"

सेठ ने कहा – "अवश्य, मकान बनवा लो।" अब मकान बन गया।

किसी ने सेठ से कहा – "किस झगड़े में फँस गए? श्रीनगर अभी दूर है। ऊपर से सर्दी का मौसम आ रहा है। बर्फ पड़ने से सारे रास्ते रुक जाएँगे।"

सेठ ने कहा – "आप ठीक कहते हैं, पर पहले ताँगा तो बन जाए।"

मकान बनते कई दिन लग गए। बढ़िया रंग–रोगन से सजा ताँगा श्रीनगर को चला। पर रास्ते में ही भयंकर हिमपात हो गया। सारे जंगल और पहाड़ हिम से भर गए। अब सेठजी न आगे जा सके और न पीछे मुड़ सके। माथा पकड़कर वहीं बैठ गए।

सेठ ने जो भूल की, वही हम कर रहे हैं। तुम्हारा यह शरीर किराये का ताँगा है। पर तुम्हें यह यात्रा के लिए ही मिला है। अगर तुम सारी आयु इसे रंग–रोगन में सजाने में ही लगे रहोगे तो, याद रखो, आयु का हिमपात किसी भी दिन हो जाएगा और तेरा मार्ग बन्द हो जाएगा। इसलिए सचेत हो जा, यज्ञरूपी दिव्यशक्ति का सहारा ले और सतत अपने यात्रा–मार्ग पर बढ़ता चल! यज्ञ की पुनीत ज्वालाएँ तुझे शिक्षा दे रही हैं –

भ्रमते भ्रमते देह–रथ हुआ है चकनाचूर।
प्रीतम नगरी जीव रे, अभी बड़ी है दूर।।

यज्ञ ही वह साधन है जिससे इस यात्रा में उत्साह और शक्ति प्राप्त होती है, कष्ट–सहन की योग्यता प्राप्त होती है। यज्ञ की दीक्षा से यही दक्षिणारूपी आनन्द आत्म–बल के रूप में हृदय में संगृहीत होता है।

क्रमशः

सांख्यदर्शन के भाष्यकारों के जीव के स्वरूप विषयक मन्तव्य

● भावेश मेरजा

श्री आचार्य आनन्द प्रकाश जी (आर्ष शोध संस्थान अलियाबाद, तेलंगाना) स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक के शिष्य हैं। आपने सांख्य, वैशेषिक आदि दर्शन शास्त्रों के हिन्दी में सरल सुगम भाष्य लिखे हैं। आपने सांख्य दर्शन के प्रथम अध्याय के 20 से लेकर 54 तक के 35 सूत्रों को वैसे तो प्रक्षिप्त बताया है, पुनरपि ये सूत्र के प्रक्षिप्त होने के हेतु देते हुए उन पर अपनी महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ भी दी हैं, जो पठनीय हैं। 51वें सूत्र की समीक्षा में लिखा है –

"सांख्य के अनुसार प्रत्येक क्रियावान् पदार्थ मूर्त नहीं होता, अपितु व्यक्त क्रियावान् पदार्थ ही मूर्त्त होता है। अव्यक्त आत्मा क्रियावान् होते हुए भी मूर्त नहीं होता। इसलिए मूर्त पदार्थों के अन्य धर्मों की आत्मा में आशंका करना अनुचित है।" (पृ. 35, प्रथम संस्करण)

प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान श्री पण्डित उदयवीर जी शास्त्री ने अपने सांख्यदर्शनम् में इन्हीं सूत्रों को प्रक्षिप्त बताया है। उन्होंने भी 51वें सूत्र पर अपनी ऐसी ही टिप्पणी देते हुए लिखा है–

"सांख्यसिद्धान्त के अनुसार क्रियावाली वस्तु वही मूर्त हो सकती है, जो व्यक्त हो। अव्यक्त तत्त्व क्रियावान् होते हुए भी मूर्त नहीं होता, आत्मा अव्यक्त है, वह सक्रिय भी हो, तो भी मूर्त होना उसका सम्भव नहीं, इसलिए मूर्त पदार्थों के अन्य धर्मों का उसमें सम्भव होने का प्रश्न ही नहीं उठता।" (पृ. 316, प्रथम संस्करण)

आशा है कि उक्त दोनों विद्वानों की ये बातें "जीव साकार है या निराकार?" – इस प्रश्न का उत्तर ढूँढने में सहायक सिद्ध होंगी।

ध्यातव्य है कि आर्यसमाज के अद्‌भुत शास्त्रार्थी, तार्किक, प्रबल वक्ता तथा उपदेशक श्री पण्डित बिहारीलाल जी शास्त्री (देहान्त 3.1.1986) ने अपने "निराकार साकार निर्णय" नामक महत्त्वपूर्ण लघु ग्रन्थ (प्रकाशन नवम्बर 1965, प्रकाशक : डॉ. राजेन्द्र कुमार) में दो स्थानों पर जीव को स्पष्टतः "निराकार" लिखा है। जैसा कि –

1. "निराकार जीवात्मा शरीर में गति करता है तो शरीर के कारण वह साकार नहीं कहलायेगा।" (पृ.8)
2. "आपका शरीर साकार है। आप (आत्मा) निराकार है।" (पृ.26)

8–17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,
जि. भरूच, गुजरात – 392015,
मो. 9879528247

वरुण की गौ

● महात्मा चैतन्यस्वामी

परमात्मा ने हमें जो मानव–शरीर रूपी रथ दिया है वह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यही वह वाहन है जिसका सदुपयोग करके हम संसार में भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख के लक्ष्य को प्राप्त करके जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं, इसलिए प्रभु से प्रार्थना की गई है कि–

ओ३म् युक्तस्ते अस्तु दक्षिण उत सव्यः
शतक्रतो।
तेन जायामुप प्रियां मन्दानो याह्यन्ध्सो
योजान्विन्द्र ते हरी।।

(ऋ.1–83–5)

हे शतक्रतो! (प्रज्ञा व कर्मोंवाले प्रभो!) आप हमारे इस शरीर–रूपी रथ का (**दक्षिणः**) दाहिने पार्श्व में जुतने–वाला अश्व इस रथ में जुता हुआ हो (दक्षिण शब्द चतुर, कुशल, समझदार, ज्ञानी की भावना को देता हुआ ज्ञानेन्द्रिय–रूप अश्व का संकेत दे रहा है।) (**उत सव्यः**) और वाम पार्श्व में जुतने वाला घोड़ा भी ('षू' धातु निर्माण का संकेत करता है) अर्थात् कर्मेन्द्रिय–रूप अश्व भी भली प्रकार जुता हुआ हो। ज्ञानेन्द्रिय–रूप अश्व दक्षिण है और कर्मेन्द्रिय–रूप अश्व सव्य है। आगे कहा है कि (**प्रियां जायाम् उपयाहि**) वेदवाणी हमारी पत्नी हो और हम उसके पति बनें। सोमरक्षण से हम आनन्द का अनुभव करें। जब भक्त ने यह प्रार्थना की तो परमात्मा ने भक्त की प्रार्थना को सुनकर अगले ही मन्त्र में कहा–

ओ३म् युनज्मि ते ब्रम्हणा केशिना हरी उप
प्र याहि दधिषे गभस्त्योः।
उत्त्वा सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण
वान्वज्रिन्त्समु पत्न्यामदः।।

(ऋ.1–83–6)

हे मानव! (**ते ब्रम्हणा**) तेरे वर्धन के लिए मैं (**केशिना**) प्रकाश की रश्मियों वाले (**हरी**) इन्द्रियाश्वों को (**युनिज्म**) तेरे शरीर–रथ में जोतता हूँ (**उपप्रयाहि**) इस रथ से तू मेरे समीप आने वाला हो। इसके लिए तू (**गभस्त्यो**) अपने हाथों में (**दधिषे**) इन घोड़ों की लगामों को धारण करने वाला बन। (**उत**) और (**रभसाः**) शक्ति को देने वाले (**सुतासः**) भोजन से उत्पन्न ये सोमकण (**त्वा अमन्दिषुः**) तुझे आनन्दित करें। तू (**पूषण्वान्**) अपना उचित पोषण करने वाला बन। (**वज्रिन्**) हाथ में क्रियाशीलतारूप वज्र को लिए हुए (**पत्न्या**) वेदवाणीरूप पत्नी के साथ (**समु मदः**) खूब ही हर्ष का अनुभव कर। प्रभु ने उपदेश दिया है कि मुझ तक पहुँचने के लिए (या जीवन के आनन्द व प्रत्येक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए) :–

1. केशिना हरी युनिज्म उपप्रयाहि– इस शरीर तथा प्रभु–प्रदत्त इन्द्रियों रूपी घोड़ों को दृढ़तापूर्वक पकड़ अर्थात् तेरा शरीर पुष्ट और इन्द्रियाँ संयमित हों **2. वज्रिन्–** तेरे हाथ में क्रियाशीलतारूपी वज्र हो अर्थात् जीवन क्रियाशील हो **3. पत्न्या–**तू वेदवाणीरूपी पत्नी के साथ ज्ञानी बन 4. सबसे बड़ी बात कही कि मैंने तुझे जो इन्द्रिय–रूपी घोड़े दिए हैं इनकी लगाम को काबू में कर। परमात्मा ने जो रथ हमें दिया है उस पर हम कैसे आरूढ़ हों इसका भी वेद में निर्देश दिया गया है–

ओ३म् स घा तं वृषणं रथमधि
तिष्ठाति गोविदम्।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति
योजा न्विन्द्र ते हरी।।

(ऋ.1–83–4)

प्रभु का स्मरण करने वाला ही इस शरीर–रूप रथ का ठीक से अधिष्ठातृत्व करता है। वह प्रभु कृपा से कर्मेन्द्रियों से इस रथ को कर्मों में (वृषण) सशक्त बनाता है और ज्ञानेन्द्रियों से ज्ञानप्राप्ति में लगा रहकर इसे (गोवित्) प्रकाश की किरणों वाला बना पाता है। हम कर्म करें मगर ज्ञानपूर्वक कर्म करें, रथ चलाएँ मगर अन्धेरे में नहीं अन्यथा मंजिल तक नहीं पहुँच सकेंगे बल्कि मार्ग में ही कहीं दुर्घटनाग्रस्त होकर दुःख भोगेंगे.. .। अथर्ववेद में (अथर्व 5–एकादश सूक्त) बहुत अच्छा प्रसंग आया है कि वरुण के पास एक रंग–बिरंगी पृश्नि गौ थी जिसे उसने अथर्वा को दान में दे दिया मगर कुछ समय के बाद उसे वापस लेने के लिए पहुँच गया। अथर्वा और वरुण में कुछ संवाद हुआ और वरुण ने अथर्वा को योग्य जानकर वह गौ उसी के पास रहने दी।

जब वरुण गौ को वापस लेने पहुँचे तो अथर्वा ने पूछा–एक बार जब यह पृश्नि मुझे दक्षिणा में दे दी तो पुनः वापस क्यों माँगते हो? वरुण– मैं किसी लोभ व कामना से वापस नहीं माँग रहा हूँ, क्योंकि ऐसा करने वाले को पाप लगता है। इस पृश्नि को तो मैं इसलिए माँग रहा हूँ, क्योंकि मैं यह उसे देता हूँ जो इस पर 'चक्षणा' या ध्यान करने वाला हो। अब तुमसे मैं पूछता हूँ कि 1. तुम्हारे अन्दर क्या ज्ञान है? (किसी भी मूल्यवान पदार्थ के संचालन आदि का ज्ञान होना अनिवार्य है) 2. किस स्वभावजनित विद्या से तुम सृष्टि के पदार्थों को जानते हो? (सभी पदार्थों के स्वभाव तथा अपनी इन्द्रियों, अन्तःकरण आदि के स्वभाव को जानकर ही उन्हें दिशा दी जा सकती है तथा उनका सही–सही उपयोग लिया जा सकता है) 3. इस पृश्नि के स्वामित्व हेतु जातवेदा होना आवश्यक है। तुम किस काव्य व ज्ञान के बल पर जातवेदा हो? (सृष्टि–पदार्थों का लाभ लेने के लिए उनका ज्ञान होना जरूरी है–वैज्ञानिकों ने कितने चमत्कार कर दिखाए हैं, इसी प्रकार भीतर के चमत्कारों के लिए आत्मचेत्ता होना जरूरी है) अथर्वा–हे वरुण! सुनो, मैं सत्य कहता हूँ, 1. मैं ज्ञान के द्वारा आत्म–स्वरूप हूँ (आत्मा के स्वरूप को जानता हूँ) 2. स्वभाव–बोध के कारण जातवेदा हूँ (आत्म–बोध होने के कारण ही मुझमें स्वभाव–बोध है जिससे मैं जातवेदा हूँ) 3. मुझे व्रत से कोई डिगा नहीं सकता। (मैं पूर्णरूप से संकल्पशील हूँ) उसके बाद अथर्वा ने वरुण की प्रशंसा की कि मैं जानता हूँ कि तुमसे बड़ा कोई कवि नहीं है, मेधाशक्ति में तुम जैसा ध्यानी और कोई नहीं, विश्व–भवन में तुमसे कुछ भी छिपा हुआ नहीं, कैसा भी मायावी हो, तुम्हारे सामने काँप उठता है, तुम सुन्दर नीति के प्रदर्शक हो, तुम वीर्यवान् हो... हे वरुण यह बताओ कि–

1. दिया हुआ दान वापस माँगने वाले पापियों के प्रति तुमने जो–जो कठोर वचन कहे हैं, कहीं तुम्हारा नाम भी उन्हीं में न आ जाए जो तुम मुझसे यह दी हुई वस्तु माँग रहे हो, कहीं तुम्हें भी लोग अदानशील कहकर अपमानित न करें। इसके उत्तर में वरुण ने कहा–हे स्तुति ज्ञान करने वाले ऐसा नहीं होगा, मुझे लोग अदानी नहीं कहेंगे, क्योंकि तुम्हें अधिकारी (पात्र) जानकर मैं पुनः इस पृश्नि को तुम्हें देता हूँ। जहाँ–जहाँ मनुष्य बसते हैं, अपनी पूरी शक्ति से इस यश को सुना दो (कि दान के पात्र बनो तथा पात्र को दान मिलता ही है आदि....दुनिया को यह बताओ कि इस पृश्नि का उपयोग करके कैसे यशस्वी बना जाता है....)
2. हे वरुण! कृपया बताएँ कि इस लोक से परे क्या है और उससे इस ओर क्या है? इसका उत्तर दिया–एक तत्त्व इस लोक के पार है और इस पार भी एक ही अलभ्य तत्त्व है,संकीर्ण–बुद्धि वाले जो लोक–परलोक आदि को व ईश्वर–तत्त्व को नकारते हैं, वे तो धूलि के समान हैं, उनकी बातें प्रमाण नहीं।
3. प्रभो! आप मेरे सप्त–पद सखा हो, हमारा–तुम्हारा एक ही आदि कारण है, हम दोनों बन्धु हैं (**स नो बन्धुर्जनिता**) इसलिए अब मुझे 'अपने उस समान सम्बन्ध का ज्ञान' का वह वर दो (अर्थात् यह बताएँ) वरुण–जो वर मैंने पहले नहीं दिया उसे स्वीकारो, क्योंकि तुम मेरे सप्तपद सखा हो 'गान करने वाले भक्त के लिए मैं जीवन देने वाला देव हूँ, स्तुति करने वाले विप्र के लिए मैं सुमेधा विप्र हूँ। 'अथर्व. के इस 5वें काण्ड के 11वें सूक्त के अन्तिम मन्त्र में कहा है कि स्तुति करने वाले विद्वान् के लिए तू–1. (**वयोधाः**) अन्न देने वाला है 2. (**सुप्रशस्तं राधः**) उत्तम प्रशंसनीय धन देनेवाला है 3. (**सुमेधाः**) सुमेधा (विवेकशीलतापूर्ण ज्ञान) देने वाला है 4. (**स्वधावन्**) धारणा–शक्ति देने वाला है 5. (**अजीजनः**) अपने बन्धु इस अथर्वा को आप योगी बनाते हैं 6. (**नः सखा असि, परमं च बन्धुः**) योगी बनकर हम आपके ही मित्र और परम–बन्धु बन जाते हैं।

यह जो अथर्व. (5–11–1) में कहा गया है– **पृश्निं दक्षिणां ददावान्** यह '**पृश्नि**' कौन (क्या) है? – वरुण की '**पृश्नि गौ**' यह प्रकृति है। (गौ का अर्थ गाय, भूमि और वाणी आदि भी है–यह भी परमात्मा–प्रदत् ही हैं, पृश्नि को अन्यत्र वेद–विद्या तथा स्पर्श करने वाली आत्मा भी कहा है, यह चित्र–विचित्र रंगों वाली कही गई है, सत्त्व, रज व तम के कारण प्रकृति पृश्नि है, सतत् परिवर्तनशील होने के कारण जगती है, प्रकृति को अदिति भी कहा है तथा अदिति की उपमा गौ के साथ भी दी गई है... इस प्रकृति का सही ढंग से उपयोग किया जाना इस सूक्त का भाव है। सही ढंग से उपयोग करने वाला ही वरुण के तीन पाशों से मुक्त हो जाता है।

बृ. उप. (अ.1ब्रा.1) में स्वर्गगामी अश्व का स्वरूप और गति का बहुत ही सुन्दर कथानक दिया है (स्वामी ब्रम्हमुनि जी ने इसकी विशद् विवेचना की है) जिससे हमें इस पृश्नि अर्थात् प्रकृति का सही–सही प्रयोग करके तथा परमात्मा द्वारा प्रदत् दक्षिण व सव्य (वाम) से संपुष्ट इस अद्भुत् शरीर–रथ को मंजिल तक पहुँचा सकें। इस कथा में एक विलक्षण पशु का वर्णन है जो स्वर्ग को जाने वाला घोड़ा है। वैदिक–साहित्य में दिए कथानकों का भाव समझना चाहिए। कामधेनु की चर्चा बहुत सुनी गई है, जिससे हम जो चाहें प्राप्त कर सकते हैं (महा. आदि पर्व) यह ब्रम्हर्षि वशिष्ठजी के पास है। उनके सौ पुत्र घेरा डालकर उसकी रक्षा कर रहे हैं, विश्वामित्र ने उनके सौ पुत्रों को मारकर, घेरा तोड़कर उसे बाहर निकाल दिया, हरण कर लिया। कामधेनु के अपहरण से वशिष्ठजी को ग्लानि व वैराग्य हो गया और आत्मघात के लिए पर्वतकूट से नीचे गिर गए मगर रूई के ढेर पर गिरे के समान नहीं मरे, दूसरी बार स्वयं को महावन की अग्नि में झोंक दिया मगर अग्नि भी उन्हें जला न सकी, तीसरी बार समुद्र में जा गिरा पर समुद्र ने भी उसे उच्छालकर बाहर फेंक दिया, चौथी बार वर्षा–ऋतु में जलपूर्ण विपाशा में फन्दा लगाकर डूबकी लगाई मगर नदी ने उन्हें पाशरहित कर दिया और वे बच गए। पाँचवी बार अपने को हिमवती नदी में गिरा दिया, उनके गिरते ही नदी ही टुकड़े–टुकड़े हो गई तथा वे बच गए। उक्त कथा अलंकारिक है। सब कामनाओं को पूरी करने वाली कामधेनु यह गौ–पृश्नि–पृथिवी है (यह सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली है) निघण्टु (1–1) में इसे '**गौःपृथिवीनाम**' 'गौ' कहा है, विश्वामित्र सूर्य है (विश्वामित्रः सर्वमित्रो भगवानादित्यः–स्कन्दस्वामी), वशिष्ठ फैला हुआ जल–समूह है (**वसिष्ठो5प्याच्छादित**

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

यजुर्वेद में ईश्वर का स्वरूप

● शिव नारायण उपाध्याय

यजुर्वेद में ईश्वर के स्वरूप का वर्णन विस्तृत रूप में हुआ है। यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र संख्या 4 में यह वर्णन इस प्रकार है–

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा
आप्नुवन् पूर्वमर्शत्।
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्त स्मिन्नपो
मातरिश्वा दधाति।।

पदार्थ– हे मनुष्यो! जो (**एकम्**) अद्वितीय (**अनेजत्**) अचल कंपनरहित (**मनसाः**) मन के वेग से भी (**जवीयः**) अति वेगवान् (**पूर्वम्**) सबसे आगे (**अर्षत्**) चलता हुआ अर्थात् जहाँ कोई चलकर जाए वहाँ ब्रह्म प्रथम ही अपनी व्याप्ति से ही पहुँचा होता है। (**एनत्**) इस पूर्वोक्त ईश्वर को (**देवा**) चक्षु आदि इन्द्रिय (**न**) नहीं (**आप्तुवन्**) प्राप्त होते (**तत्**) वह ब्रह्म अपने आप में (**तिष्ठत्**) स्थिर हुआ अपनी अनन्त व्याप्ति से (**धावतः**) विषयों की ओर दौड़ते हुए (**अन्यान्**) आत्मा के स्वरूप से विलक्षण तथा वाणी आदि इन्द्रियों का (**अति, एति**) उल्लंघन कर जाता है (**तस्मिन्**) उस सर्वत्र अभिव्याप्त ईश्वर की स्थिरता में (**मातरिश्वा**) अन्तरिक्ष में प्राणों का कारण कहाने वाले तुल्य जीव (**अपः**) कर्म वा क्रिया को (**दधाति**) धारण करता है।

भावार्थ– ब्रह्म के अनन्त होने से जहाँ–जहाँ मन जाता है वहाँ–वहाँ पहले से ही अभिव्याप्त स्थिर ब्रह्म वर्तमान होता है। उसका विज्ञान केवल मन से होता है वह चक्षु आदि इन्द्रियों और अविद्वानों से देखने योग्य नहीं है। वह आप निश्चल हुआ सब चीजों को नियम से चलाता और नियन्त्रित करता है उसके अतिसूक्ष्म इन्द्रियगम्य न होने से धर्मात्मा योगी लोगों को ही उसका साक्षात् ज्ञान होता है अन्य को नहीं।

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य
बाह्यतः।

यजु. 40.5

(**तत्**) वह ब्रह्म (**एजति**) चलता है, (**तत्**) वह ब्रह्म (**न**) नहीं (**एजति**) चलता है (**तत्**) वह अज्ञानियों से (**दूरे**) दूर है *(**तत् उ**) वह ज्ञानियों के लिए (**अन्तिके**)* समीप है (**तत्**) वह (**अस्य**) इन (**जीव जगत् आदि**) (**सर्वस्य**) सबके (**अन्तरः**) भीतर है और (**तत् उ**) वही (**अस्य**) इन (**सर्वस्य**) सबके (**बाह्यतः**) बाहर भी है।

भावार्थ– वह ब्रह्म मूढ़ की दृष्टि से कम्पायमान जैसा है, वह आप व्यापक होने से चलायमान नहीं होता है। जो जन उसकी आज्ञा के विरुद्ध हैं वे इधर–उधर भागते हुए भी उसको नहीं जानते और जो लाग उसकी आज्ञा का अनुष्ठान करने वाले हैं वे अपने आत्मा में स्थित अतिनिकट ब्रह्म को प्राप्त होते हैं। जो ब्रह्म को प्राकृति आदि के बाहर भीतर अवयवों में अभिव्याप्त होकर अन्तर्यामिरूप से सब जीवों के सब पाप–पुण्य रूप कर्मों को जानता हुआ यर्थात् फल देता है यही सबको ध्यान में रखना चाहिए।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर
ᳩशुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः
स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।

यजु. 40.8

पदार्थ– (**स**) वह आत्मा (**स्वयम्भू**) स्वयं उत्पन्न (**पर्यगात्**) सब ओर गया हुआ अर्थात् सर्व व्यापक (**अकायम्**) अशरीरी (**अस्नावीरम्**) स्नायुरहित (**अपापविद्धम्**) निष्पाप (**शुक्रम्**) तेजोमय (**अव्रणम्**) क्षतरहित (**शुद्धम्**) पवित्र (**कविः**) सर्व दृष्टा (**मनीषी**) मन का स्वामी (**परिभूः**) सबके ऊपर रहने वाला है। उसने (**याथातत्थ्यतः**) वस्तुस्थिति के अनुसार (**शाश्वतीभ्य**) सनातन अनादि स्वरूप अपने–अपने स्वरूप के उत्पत्ति और विभाग रहित (**समाभ्यः**) प्रजाओं के लिए (**अर्थान्**) चेद द्वारा सब पदार्थों को (**व्यवधात्**) बनाता है। वही परमेश्वर हम लोगों द्वारा उपासना योग्य है।

हम मंत्र के द्वारा यजुर्वेद ने ब्रह्म के स्वरूप का स्पष्ट ज्ञान सबको करा देने में सफलता प्राप्त की है। यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 21 में ईश्वर को सृष्टि कर्ता माना है।

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो
विष्णोः स्पूरसि विष्णोर्धुवोऽसि।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।

पदार्थ– जो यह अनेक प्रकार का जगत् है वह (**विष्णो**) व्यापक परमेश्वर के प्रकाश से (**रराटम्**) उत्पन्न होकर प्रकाशित (**असि**) है। (**विष्णोः**) सर्व सुखः प्राप्त करने वाले ईश्वर से (**स्युः**) विस्तृत (**असि**) है। सब जगत् (**वैष्णवम्**) यज्ञ का साधन (**असि**) है और (**विष्णोः**) सब में प्रवेश करने वाले जिस ईश्वर के (**श्नप्त्रे**) जड़ चेतन के समान दो प्रकार का शुद्ध जगत् है, उस सब जगत् के उत्पन्न करने वाले जगदीश्वर। हम लोग (**त्वा**) आपको (**विष्णवे**) यज्ञ का अनुष्ठान करने के लिए आश्रय करते हैं।

भावार्थ– मनुष्यों को उचित है कि इस जगत् का परमेश्वर रचने और धारण करने वाला व्यापक इष्टदेव है, ऐसा जानकर सब कामनाओं को सिद्ध करें।

इस सृष्टि को ध्यान से देखकर विचारने से यह ज्ञात होता है कि इसमें कुछ स्थाई नियम कार्य कर रहे हैं। नियम बिना नियामक के नहीं बनते हैं इसलिए यजुर्वेद का कथन है–

ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां
देवानांᳩसमित् सोम। त्वᳩतनूक्रदभ्यो
द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्य उरू यन्तासि
बरूथ स्वाहा।
जुषाणो अप्तुराज्यस्य वेतु स्वाहा।

यजुर्वेद 5.35

पदार्थ– हे (**सोम**) ऐश्वर्य प्रदाता जगदीश्वर। आप विश्वेषाम् सब (**देवानाम्**) विद्वानों के (**विश्वरूपम्**) सब रूप युक्त (**ज्योतिः**) सबके प्रकाश करने वाले (**समित्**) अच्छे प्रकाशित (**असि**) हैं। (**तनूकृदभ्यः**) शरीरों का संपादन करने (**द्वेषोभ्यः**) और द्वेष करने वाले जीवों तथा (**अन्यकृतेभ्यः**) अन्य मनुष्यों के किये गए दुष्ट कर्मों से (**यन्ता**) नियम करने वाले (**असि**) हैं। उनसे (**उरूः**) बहुत (**बरूथम्**) उत्तम गृह (**स्वाहा**) वाणी (**अप्तुः**) व्यापक (**आज्यस्य**) विज्ञान को (**जुषाणाः**) सेवन करता हुआ मनुष्य (**स्वाहा**) वेदवाणी को (**वेतु**) जाने।

भावार्थ– जिससे परमेश्वर सब लोकों का नियम करने वाला है इससे ये सब नियम में चलते हैं।

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य
वरूणास्याग्नेः।
आप्रा द्यावा पृथिवी अन्तरिक्षᳩसूर्य आत्मा
जगतस्तस्थुपश्च स्वाहा।

यजुर्वेद 7.4.2

भावार्थ– जिस कारण परमेश्वर आकाश के समान सब जगह व्याप्त, सूर्य के समान स्वयं प्रकाशमान और वायु के समान सबका अन्तर्यामी है इससे सब जीवों के लिए सत्य और असत्य का बोध कराने वाला है। जिस किसी पुरुष को परमेश्वर को जानने की इच्छा हो वह योगाभ्यास करके अपनी आत्मा में उसे देख सकता है अन्यत्र नहीं। ब्रह्म को जानने के लिए प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध सब लोक दृष्टान्त हैं।

यजुर्वेद अध्याय 13 मंत्र 3 में कहा गया है कि–

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरूस्ताद्वि सीमतः
सुरूचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाःसतश्च
योनिमसतश्च वि वः।

पदार्थ – जो (**पुरूस्ताद्**) सृष्टि के आदि में (**जज्ञानम्**) सबका उत्पादक और ज्ञाता (**प्रथमम्**) विस्तार युक्त और विस्तार कर्ता (**ब्रह्म**) सबसे बड़ा जो (**पुरूषः**) सुन्दर प्रकाश युक्त और सुन्दर रुचि का विषय (**वेनः**) ग्रहण करने योग्य जिस (**अस्य**) इसके (**बुध्न्याः**) जल संबंधी आकाश में वर्तमान सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और नक्षत्र आदि (**विष्ठाः**) विविध स्थानों में स्थित (**उपमाः**) ईश्वर ज्ञान के दृष्टान्त लोक हैं उन सबको (**सः**) वह (**आवः**) अपनी व्याप्ति से अच्छादित करता है, वह ईश्वर (**विसीमतः**) मर्यादा से (**सतः**) विद्यमान देखने योग्य (**च**) और (**असतः**) अव्यक्त (**च**) और कारण के (**योनिभ्**) आकाश रूप स्थान को (**वि वः**) ग्रहण करता है उसी ब्रह्म की उपासना सभी लोगों को नित्य अवश्य करनी चाहिए।

अगले मंत्र में इसी भावना को आगे बढ़ाया गया है–

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः
पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कास्मै देवाय
हविषा विधेम।

यजुर्वेद 13.4

भावार्थ– हे मनुष्यो! तुमको जानना योग्य है कि इस प्रसिद्ध सृष्टि की रचना की पूर्व परमेश्वर ही विद्यमान था। जीव गाढ़ निद्रा सुषुप्ति में लीन और जगत् का कारण प्रकृति अत्यन्त सूक्ष्मावस्था में आकाश के समान एक रस स्थिर था। जिसने सब जगत् को उत्पन्न और धारण किया है वही सबका स्वामी उस समय जाग्रत था। वही इस पृथ्वी और अन्तरिक्षस्थ लोकों का एक मात्र धारण कर्ता है। उसी सुख स्वरूप देवाधिदेव की हमें उपासना करनी चाहिए। ईश्वर को चेतन स्वरूप माना गया है। इस पर यजुर्वेद का कथन है–

देवश्य चेततो महम्प्रि सवितुर्हवामहे।
सुमतिं सत्य राधसम्।

यजु. 22.11

पदार्थ– हे मनुष्यों! जैसे हम लोग (**सवितुः**) समस्त संसार के उत्पन्न करने वाले (**चेतसः**) चेतन स्वरूप (**देवस्य**) स्तुति करने योग्य ईश्वर की उपासना कर (**महिम्**) बड़ी (**सत्यराधसम्**) जिससे जीव सत्य को सिद्ध करता है उस (**सुमतिम्**) सुन्दर बुद्धि को (**प्र हवामहे**) ग्रहण करते हैं, वैसे उस परमेश्वर की उपासना कर उसे बुद्धि को तुम लोग प्राप्त होओ। सुष्टि प्रवाह से अनादि है! सृष्टि उत्पत्ति और प्रलय होते रहते हैं।

पुरूषएवेदंᳩसंर्व यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यद्न्नेनातिरोहति।

यजु.31.2

पदार्थ– हे मनुष्यो! (**यत्**) जो (**भूतम्**) उत्पन्न हुआ (**च**) और (**यत्**) जो (**भाव्यम्**) उत्पन्न होने वाला (**उत**) और (**यत्**) जो (**अन्नेन**) पृथ्वी आदि के सम्बन्ध से (**अतिरोहति**) उत्पन्न बढ़ता है उस (**इदम्**) इस प्रत्यक्ष परोक्ष रूप (**सर्वम्**) समस्त जगत् को (**अमृतत्वस्य**) अविनाशी मोक्ष रूप कारण का (**ईशानः**) अधिष्ठाता (**पुरूष**) परमात्मा (**एव**) ही रचता है।

अगले मंत्र में कहा गया है कि यह सब सूर्य चन्द्रादि लोकान्तर चराचर जितना जगत् है वह सब चित्र–विचित्र रचना के अनुमान से परमेश्वर के महत्त्व को सिद्ध कर उत्पत्ति स्थिति और प्रलय रूप से तीनों काल में घटने–बढ़ने से भी परमेश्वर के एक चतुर्थांश में ही रहता किन्तु इस ईश्वर

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

ग्रन्थकार लाला लाजपतराय

● **डॉ. भवानी लाल भारतीय**

भारत की आज़ादी के आन्दोलन के प्रखर नेता लाला लाजपतराय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार करता है। अपने देश, धर्म तथा संस्कृति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था, उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी। उनके बहुविध क्रियाकलाप में साहित्य–लेखन एक महत्त्वपूर्ण आयाम है। वे उर्दू तथा अंग्रेजी के समर्थ रचानाकार थे।

लालाजी का जन्म 28 फरवरी, 1865 को अपने ननिहाल के गाँव ढुंढ़िक (जिला फरीदकोट, पंजाब) में हुआ था। उनके पिता राधाकृष्ण लुधियाना जिले के जगराँव कस्बे के निवासी अग्रवाल वैश्य थे। लाला राधाकृष्ण अध्यापक थे। वे उर्दू–फारसी के अच्छे जानकार थे तथा इस्लाम के मन्तव्यों में उनकी गहरी आस्था थी। वे मुसलमानी धार्मिक अनुष्ठानों का भी नियमित रूप से पालन करते थे। नमाज़ पढ़ना और रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना उनकी जीवनचर्या का अभिन्न अंग था तथापि वे सच्चे–जिज्ञासु थे। अपने पुत्र लाला लाजपतराय के आर्यसमाजी बन जाने पर उन्होंने वेद के दार्शनिक सिद्धांत त्रैतवाद (ईश्वर, जीव तथा प्रकृति का अनादित्य) को समझने में भी रुचि दिखाई। लालाजी की इस जिज्ञासु प्रवृत्ति का प्रभाव उनके पुत्र पर भी पड़ा था।

लाजपतराय की शिक्षा पाँचवें वर्ष में आरम्भ हुई। 1880 ई. में उन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एंट्रेंस की परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आए। यहाँ वे गवर्नमेंट कॉलेज में प्रविष्ट हुए और 1882 में एफ.ए. की परीक्षा तथा मुख्तारी की परीक्षा साथ–साथ पास की। यहीं वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आए और लाला साईंदास के प्रोत्साहन से आर्य समाज के सदस्य बन गए। डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर के प्रथम प्राचार्य लाला हंसराज (आगे चलकर महात्मा हंसराज के नाम से प्रसिद्ध) तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. गुरुदत्त उनके सहपाठी थे, जिनके साथ उन्हें आगे चलकर आर्यसमाज का कार्य करना पड़ा। इनके द्वारा ही उन्हें महर्षि दयानन्द के विचारों का परिचय मिला।

30 अक्तूबर, 1833 को जब अजमेर में ऋषि दयानन्द का देहान्त हो गया तो 9 नवम्बर, 1833 को लाहौर आर्यसमाज की ओर से एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इस सभा के अन्त में यह निश्चय हुआ कि स्वामीजी की स्मृति में एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाए, जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृत तथा हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ–साथ अंग्रेजी और पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान में भी छात्रों को दक्षता प्राप्त कराई जाए। 1886 में जब इस शिक्षण संस्था की स्थापना हुई तो आर्यसमाज के अन्य नेताओं के साथ लाला लाजपतराय का भी इसके संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे कालान्तर में डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर के महान् स्तम्भ बने।

वकालत के क्षेत्र में

लाला लाजपतराय ने एक मुख्तार (छोटा वकील) के रूप में अपने मूल निवासस्थान जगराँव में ही वकालत आरम्भ कर दी थी। उन दिनों पंजाब प्रदेश में वर्तमान हरियाणा, हिमाचल तथा आज के पाकिस्तानी पंजाब का भी समावेश था। रोहतक में रहते हुए ही उन्होंने 1885 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1886 में वे हिसार आ गए। एक सफल वकील के रूप में 1892 तक वे यहीं रहे और इसी वर्ष लाहौर आए। तब से लाहौर ही उनकी सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। लालाजी ने यों तो समाजसेवा का कार्य हिसार में रहते हुए ही आरम्भ कर दिया था, जहाँ उन्होंने लाला चन्दूलाल, पं. लखपतराय और लाला चूड़ामणि जैसे आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं के साथ सामाजिक हित की योजनाओं के कार्यान्वयन में योगदान किया, किन्तु लाहौर आने पर वे आर्यसमाज के अतिरिक्त राजनैतिक आन्दोलन के साथ भी जुड़ गए। 1888 में वे प्रथम बार कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए जिसकी अध्यक्षता मि. जार्ज यूल ने की थी। 1906 में वे पं. गोपालकृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के एक शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए। यहाँ से वे अमेरिका चले गए। उन्होंने कई बार विदेश यात्राएँ की और वहाँ रहकर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की राजनैतिक परिस्थिति की वास्तविकता से वहाँ रहकर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की राजनैतिक परिस्थिति की वास्तविकता से वहाँ के लोगों को परिचित कराया तथा उन्हें स्वाधीनता आन्दोलन की जानकारी दी।

लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों–लोकमान्य तिलक तथा विपिनचन्द्र 'पाल' के साथ मिलकर कांग्रेस में उग्र विचारों का प्रवेश कराया। 1885 में अपनी स्थापना से लेकर लगभग बीस वर्षों तक कांग्रेस ने एक राजभक्त संस्था का चरित्र बनाए रखा था। इसके नेतागण वर्ष में एक बार बड़े दिन की छुट्टियों में देश के किसी नगर में एकत्रित होते और विनम्रतापूर्वक शासन के सूत्रधारों (अंग्रेजों) से सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों को अधिकाधिक संख्या में प्रविष्ट करने की याचना करते। 1905 में जब बनारस में सम्पन्न हुए कांग्रेस के अधिवेशन में ब्रिटिश युवराज के भारत–आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो लालाजी ने उसका डटकर विरोध किया। कांग्रेस के मंच से यह अपनी किस्म का पहला तेजस्वी भाषण हुआ जिसमें देश की अस्मिता प्रकट हुई थी।

1907 में जब पंजाब के किसानों में अपने अधिकारों को लेकर चेतना हुई तो सरकार का क्रोध लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह (शहीद भगतसिंह के चाचा) पर उमड़ पड़ा और इन दोनों देशभक्त नेताओं को देश से निर्वासित कर उन्हें पड़ोसी देश बर्मा के माण्डले नगर में नजरबन्द कर दिया, किन्तु देशवासियों द्वारा सरकार के इस दमनपूर्ण कार्य का प्रबल विरोध किए जाने पर सरकार को अपना यह आदेश वापस लेना पड़ा। लालाजी पुनः स्वदेश आए और देशवासियों ने उनका भावभीना स्वागत किया। लालाजी के राजनैतिक जीवन की कहानी अत्यन्त रोमांचक तो है ही, भारतवासियों को स्वदेश–हित के लिए बलिदान तथा महान् त्याग करने की प्रेरणा भी देती है।

जन–सेवा के कार्य

लालाजी केवल राजनैतिक नेता और कार्यकर्ता ही नहीं थे, उन्होंने जन–सेवा का भी सच्चा पाठ पढ़ा था। जब 1896 तथा 1899 में उत्तर भारत में भयंकर दुष्काल पड़ा तो लालाजी ने अपने साथी लाला हंसराज के सहयोग से अकालपीड़ित लोगों को सहायता पहुँचाई। जिन अनाथ बच्चों को ईसाई पादरी अपनाने के लिए तैयार थे और अन्ततः जो उनका धर्म–परिवर्तन करने के इरादे रखते थे, उन्हें इन मिशनरियों के चंगुल से बचाकर फीरोजपुर तथा आगरा के आर्य अनाथालायों में भेजा। 1905 में कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश) में भयंकर भूकम्प आया। उस समय भी लालाजी सेवा–कार्य में जुट गए और डी.ए.वी. कॉलेज, लाहौर के छात्रों के साथ भूकम्प–पीड़ितों को राहत प्रदान की। 1907–1908 में उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में भी भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा और लालाजी को पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आना पड़ा।

पुनः राजनैतिक आन्दोलन में

1907 के सूरत के प्रसिद्ध कांग्रेस अधिवेशन में लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों के द्वारा राजनीति में गरम दल की विचारधारा का सूत्रपात कर दिया था और जनता को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गए थे कि केवल प्रस्ताव पास करने और गिड़गिड़ाने से स्वतन्त्रता मिलने वाली नहीं है। हम यह देख चुके हैं कि जनभावना को देखते हुए अंग्रेजों को उनके देश–निर्वाचन को रद्द करना पड़ा था। वे स्वदेश आए और पुनः स्वाधीनता के संघर्ष में जुट गए। प्रथम विश्वयुद्ध (1914–18) के दौरान वे एक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में पुनः इंग्लैण्ड गए और देश की आजादी के लिए प्रबल जनमत जागृत किया। वहाँ से वे जापान होते हुए अमेरिका चले गए और स्वाधीनता–प्रेमी अमेरिकावासियों के समक्ष भारत की स्वाधीनता का पक्ष प्रबलता से प्रस्तुत किया। यहाँ उन्होंने इण्डियन होम रूल लीग की स्थापना की, कुछ ग्रन्थ भी लिखे। 20 फरवरी, 1920 को जब वे स्वदेश लौटे तो अमृतसर में जलियाँवाला बाग काण्ड हो चुका था और सारा राष्ट्र असन्तोष तथा क्षोभ की ज्वाला में जल रहा था। इसी बीच महात्मा गाँधी ने असहयोग आरम्भ किया तो लालाजी पूर्ण तत्परता के साथ इस संघर्ष में जुट गए। 1920 में ही वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बने। इसी समय लालाजी को कारावास का दण्ड मिला, किन्तु खराब स्वास्थ्य के कारण वे जल्दी ही रिहा कर दिए गए।

1924 में लालाजी कांग्रेस के अन्तर्गत ही बनी स्वराज्य पार्टी में शामिल हो गए और केन्द्रीय धारा सभा (सेन्ट्रल असेम्बली) के सदस्य चुन लिए गए। जब उनका पं. मोतीलाल नेहरू से कतिपय राजनैतिक प्रश्नों पर मतभेद हो गया तो उन्होंने नेशनलिस्ट पार्टी का गठन किया और पुनः असेम्बली में पहुँच गए। अन्य विचारशील नेताओं की भाँति लालाजी भी कांग्रेस में दिन–प्रतिदिन बढ़ने वाली मुस्लिम तृष्टिकरण की नीति से अप्रसन्नता अनुभव करते थे, इसलिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं. मदनमोहन मालवीय के सहयोग से उन्होंने हिन्दू महासभा के कार्य को आगे बढ़ाया। 1925 में उन्हें हिन्दू महासभा के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष भी बनाया गया।

जीवन–संध्या

1928 में जब अंग्रेजों द्वारा नियुक्त साइमन कमीशन भारत आया तो देश के नेताओं ने उसका बहिष्कार करने का निर्णय लिया। 30 अक्तूबर, 1928 को कमीशन लाहौर पहुँचा तो जनता के प्रबल प्रतिरोध को देखते हुए सरकार ने धारा 144 लगा दी। लालाजी के नेतृत्व में नगर के हजारों लोग कमीशन के सदस्यों को काले झण्डे दिखाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुँचे और 'साइमन वापस जाओ' के नारों से आकाश गूँजा दिया। इस पर पुलिस को लाठीचार्ज का आदेश मिला। उसी समय सार्जेंट साण्डर्स ने लालाजी की छाती पर

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

कर्म करो

● **भद्रसेन**

ओम् कुर्वन्नेवेद कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। य: 40,2

शब्दार्थ – इह = इस मानव जीवन, संसार में **शतम्** = सौ **समाः** = वर्ष (तक) **कर्माणि** = इस वेदवाणी में निर्दिष्ट कर्मों को **कुर्वन्** = करते हुए **एव** = ही, पूर्ण विश्वास से, निःसन्देह भाव से **जिजीविषेत्** = जीने की इच्छा करे। क्योंकि **इतः** = इससे **अन्यथा** = भिन्न अर्थात् कर्म करने के अतिरिक्त जीवन निर्वाह प्रगति का और कोई मार्ग, ढंग, प्रक्रिया **न अस्ति** = नहीं है। **एवम्** = इस प्रकार कर्म करने से **त्वयि नरे** = तुझ कर्म कर्ता नर में **कर्म** = निर्दिष्ट केर्म न **लिप्यते** = लिप्त नहीं होता अर्थात् तुझे बन्धन में नहीं डालता, तुझ नर में कर्म लिप्त नहीं होता।

प्रसंग – वेद का अर्थ ज्ञान है, अतः वेद ज्ञान रूप वाला है। ज्ञान का सम्बन्ध मनुष्यों से ही है। मनुष्य, मानव शब्द का अर्थ भी भजन, ज्ञानशील है। हाँ, मनुष्य से अतिरिक्त पशु, पक्षी, कृमि आदि में अपने जीवन व्यवहार का बोध स्वाभाविक होता है। मनुष्यों में ज्ञान नैमित्तिक है, निमित्त = गुरु, सिखाने वाले के द्वारा ही ज्ञान विकसित होता है। अतः वेद की चर्चा का मुख्य रूप से मानव जाति से ही सम्बन्ध है। वैसे इस मंत्र के चौथे चरण में नर शब्द आया है। अतः इस मन्त्र में आई चर्चा मानव जाति से सम्बन्ध रखती है।

व्याख्या – इस मंत्र में आया 'शत समाः' सौ वर्ष की आयु, जीवन का प्रसंग मनुष्य जाति से ही जुड़ा है। जिस प्रकार जीव विज्ञानी हर प्राणी की औसत आयु बताते हैं। वह व्यवहार में गाय, घोड़े, कुत्ते आदि की प्रत्यक्ष भी होती है। यदि दुर्घटना जैसा कोई विशेष कारण सामने न आए। ठीक इसी प्रकार वेद के अनुसार मानव जाति की औसतन आयु सौ वर्ष है। हमारे चारों ओर ऐसे हज़ारों व्यक्ति मिल जाते हैं। जो एक सौ वर्ष की उम्र को पार कर चुके हैं या इस के पास हैं। आए दिन समाचार पत्रों में ऐसे समाचार छपते रहते हैं कि अमुक व्यक्ति एक सौ वर्ष से ऊपर की आयु वाला है और उसकी ऐसी स्थिति है।

इस विश्लेषण से यह धारणा वेद विरुद्ध सिद्ध होती है, कि एक निश्चित संख्या में साँस, वर्ष की आयु लेकर प्राणी संसार में आता है। हाथ की लकीरें या जन्म पत्री आदि के आधार पर कुछ ज्योतिषी निश्चित वर्ष की आयु का दावा करते हैं। हाँ, शत समाः शब्दों से यह स्पष्ट होता है, कि मानव शरीर में ऐसा मसाला, कच्चा माल लगा है कि औसतन एक सौ वर्ष चल सकता है। इससे सिद्ध होता है कि लम्बी उम्र ज़ीना बहुत कुछ मेरे–आप के जीने के ढंग पर निर्भर करता है। इसीलिए आयुर्वेद में दीर्घ आयु के अनेक उपाय सुझाए हैं। हाँ, वेद में शतवर्ष की चर्चा कम से कम तीस बार आई है। अनेकथा दीर्घ आयु की प्रार्थना तथा उपायों का भी सन्देश है। अतः वेद के अनुसार एक सौ वर्ष जीने का अधिकार, अवसर है। इसलिए इसी भावना से जीवन जीना चाहिए।

इस मंत्र के प्रथम भाग में क्रिया है–**जिजीविषेत्**, जिसका भाव है कि प्रत्येक को सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए और उसके अनुरूप ही जीने का व्यवहार भी करना चाहिए। इस व्यवहार में मुख्य क्रिया से पूर्व एक पूर्वकालिक क्रिया का भी निर्देश है और वह है–**कर्माणिकुर्वन्** एव अर्थात् वेद ने जीवन को सार्थक बनाने के लिए (वेद में जिन–जिन कर्मों को करने का विधान है उन) उन कर्मों को करते हुए ही जीने की इच्छा करें। कर्म रहित जीवन न जिएँ। अतः आलस्य को कभी भी मन में न लाएं।

गीताकार ने इस मंत्र को सामने रख कर ही कहा है–**नियंत कुरु कर्म त्वं कर्मज्यायो ह्यकर्मणः**–3,8। प्रत्येक ईश्वर विश्वासी को सदा कर्मशील रहना चाहिए। क्योंकि अकर्म आलस्य की अपेक्षा अर्थात् कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना अधिक अच्छा है। यतोहि कर्म करने पर ही सारी सफलतायें सिद्ध होती हैं। वेद में जीव के लिए आया क्रतु शब्द जहाँ कर्मशील होने की भावना देता है, वहाँ आर्य का एक अर्थ कर्मशील भी है।

मंत्र के तीसरे चरण में इसका एक ठोस हेतु दिया है कि **इतः अन्यथा न अस्ति** अर्थात् कर्म करने के बिना जीवन निर्वाह प्रगति नहीं हो सकती, क्योंकि जीवन जीने के लिए जिन पदार्थों की आवश्यकता होती है। वे सब कर्म करने पर ही प्राप्त होते हैं। कर्म करने के अतिरिक्त भौतिक पदार्थों तथा अध्यात्म सिद्धि को प्राप्त करने का और कोई ढंग, मार्ग नहीं है। इसीलिए गीताकार ने भी कहा है–

शरीरयात्राऽपि च ते न प्रसिद्धभेदकर्मणः
3, 8
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः
3, 20
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धि भर्वति कर्मजा
4,12

आजकल अपने इष्टदेव के पूजन की पद्धति में इस मन्त्र के विपरीत भावना हावी हो रही है। हम केवल नमन से ही हर कामना की पूर्ति मानते हैं। प्रायः सभी आरतियों में – मनोवांछित फल पावे की भावना भर दी गई है और इसी ललक में जिन गायत्री आदि के शरीर ही नहीं हैं, उनकी भी मूर्ति कल्पित करके उनके पूजन मात्र से हर कामना की पूर्ति मान ली गई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मूर्तिपूजा के सोलह दोषों में दो बार इसका संकेत किया है, कि ऐसी पूजा से हम बिना कर्म किए ही फल की सिद्धि मानने लग गए हैं। वस्तुतः कर्म करने से ही जीवन निर्वाह की सारी सिद्धियाँ होती हैं। अतः यही भावना हमें मन में लानी चाहिए।

ज्ञान, भक्ति को अत्यधिक महत्त्व देने वाले कर्म करते हुए संकोच करते हैं, क्योंकि कर्म करने पर उसका फल कर्म के अनुरूप अवश्य मिलता है। तब कर्ता और फल के चक्र में घूमता रहता है। अतः कर्म तथा उसके फल के बन्धन से बचना चाहिए। इसी को स्पष्ट करते हुए आगे कहा है–**एवं त्वयि नरे कर्म न लिप्यते**– शब्दों से मन्त्र सन्देश देता है कि यह भय उचित नहीं है। क्योंकि अशुभ कर्म ही बन्धन में डालते हैं। वेद में निर्दिष्ट शुभ कर्म से मोक्ष (दुख, बन्धन, झंझट से छुटकारा ही) प्राप्त होता है। जैसे किसी राज्य द्वारा आदिष्ट कर्म अपने करने, पालने वालों को कभी भी बन्धन में नहीं डालते। यथा सेनापति के आदेश के अनुरूप चलने वाला कभी कारागार को प्राप्त नहीं होता। वह कभी अपराधी घोषित नहीं होता, अपितु अनेक ऐसे अवसरों पर पुरस्कृत होते हैं। हाँ, यदि उसी पुरस्कृत सैनिक ने अपनी इच्छा से स्वार्थवश कोई सामान्य अपराध भी किया है, तो वह कर्म के अनुरूप उसका दण्ड अवश्य प्राप्त करता है। अनेक पुरस्कृत व्यक्ति अनुचित करने पर दण्डित भी हुए हैं।

भावार्थ – जीवन सन्देश की दृष्टि से यह वेद मन्त्र विशेष स्थान रखता है। अतः यह जीवन दर्शन का विशेष सन्देश है, कि मानव जीवन एक स्वर्ण अवसर है। इस अवसर का लाभ यही है कि अच्छे से अच्छे कर्मकर के सफलता प्राप्त की जाए।

182 शालीमार नगर
होशियारपुर
मो. 09464064398

☞ *पृष्ठ 06 का शेष*

ग्रन्थकार लाला लाजपतराय

लाठी का प्रहार किया जिससे उन्हें सख्त चोट पहुँची। उसी सायं लाहौर की एक विशाल जनसभा में एकत्रित जनता को सम्बोधित करते हुए नरकेसरी लालाजी ने गर्जना करते हुए कहा – **मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की प्रत्येक चोट अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील का काम करेगी।** इस दारुण प्रहार से आहत लालाजी ने अठारह दिन तक विषम ज्वर की पीड़ा भोगकर 17 नवम्बर, 1928 को परलोक के लिए प्रस्थान किया।

बहुआयामी व्यक्तित्व

लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्ता, सेवाभावी समाजसेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षाशास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। आर्य समाज से ही उन्होंने देश–सेवा का पाठ पढ़ा था और स्वामी दयानन्द से उन्होंने समर्पण तथा सेवा का आदर्श ग्रहण किया था। उनके शब्दों में – **आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश–सेवा का पाठ आर्यसमाज से ही पढ़ा है।**

लाला लाजपतराय–लेखक और साहित्कार के रूप में

लालाजी का लेखन विशद, विविध विषयों से सम्पृक्त था, बहुआयामी था, जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

जीवनी लेखन – स्वदेशी और अन्य देशीय महापुरुषों के जीवन–चरित्र–लेखन का उनका कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उनके द्वारा निम्न जीवन–चरित्र लिखे गए–

लाइफ एण्ड वर्क ऑफ पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम.ए., महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम, योगिराज महात्मा श्रीकृष्ण का जीवन–चरित्र, शिवाजी महाराज का जीवन–चरित, महात्मा ग्वीसेप मैजिनी का जीवन–चरित, गैरीबाल्डी– उर्दू में यह जीवन, सम्राट् अशोक, दि आर्यसमाज, दि मैसेज ऑफ भगवद्गीता, अनहैप्पी इण्डिया, England's Debt to India, The Evolution of Japan, Ideal of Non-cooperation and other Essays, India's will to Freedom, The Problems of National Education in India, The Political Future of India, Story of My Deporation, Young India-An Interpretation and History of the National Movement, Report of People's Famine Relief Movement 1908, The Story of My Life

यह लालाजी की आत्मकथा है जिसका हिन्दी अनुवाद पं. भीमसेन विद्यालंकार ने किया, जो 1932 में नवयुग ग्रन्थमाला, लाहौर से प्रकाशित हुआ।

प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री तथा पं. अलगूराय शास्त्री जैसे देशभक्तों ने लालाजी से प्रेरणा लेकर ही राष्ट्र–सेवा का पाठ पढ़ा था।

आर्यसमाज के विद्वान् लेखक और साहित्यसेवी
से साभार

जीवन की सफलता का आधार ज्ञान व पुरुषार्थ

● मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य जीवन हमें परमात्मा से पूर्वजन्म के प्रारब्ध को भोगने व नये कर्म कर दुःखों से मुक्ति प्राप्त करने के लिये मिला है। प्रारब्ध वह कर्म संचय है जो हमने पूर्व जन्मों में किये हैं परन्तु जिसका सुख व दुःख रूपी भोग अभी करना शेष होता है। योगदर्शन के एक सूत्र में कहा है कि प्रारब्ध के अनुसार ही हमें जाति, आयु व भोग की प्राप्ति होती है। जाति का अर्थ यहाँ मनुष्य व पशु, पक्षी आदि अनेक जातियों से है। समस्त मनुष्य जाति एक ही जाति है। इस मनुष्य जाति के दो भेद स्त्री जाति व पुरुष जाति किये जा सकते हैं। वर्ण और जाति दो अलग–अलग शब्द हैं। वर्ण का अर्थ है चुनाव करना। इसके लिये हमें अपनी योग्यता बढ़ानी होती है तभी हम इष्ट का चुनाव कर सकते हैं। यदि हम ज्ञान व बल में हीन हैं तो हम क्षत्रिय के काम न करने से क्षत्रिय नहीं बन सकते। सेना में भर्ती होने के लिये न्यूनतम शिक्षा व शारीरिक बल आदि का होना आवश्यक माना जाता है अन्यथा सैनिक व सैन्य अधिकारी नहीं बन सकते। अध्यापक व उपदेशक के लिये भी अपने विषय का ज्ञान व बोलने की कला आना आवश्यक होता है। एक धर्म विषयक लेखक के लिये भी धर्म का ज्ञान व लेखन का अभ्यास आवश्यक होता है। इसी प्रकार से वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित न होकर मनुष्य के ज्ञान व कर्म अथवा पुरुषार्थ सहित उसकी क्षमता पर आधारित होती है। वर्तमान में समाज में जन्मना जाति व्यवस्था चल रही है। यह व्यवस्था अनुचित व अविवेक पूर्ण होने से त्याज्य है। वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों उपनिषद, दर्शन आदि में इसका उल्लेख नहीं है। देश के विधान द्वारा इस पर रोक लगाई जानी चाहिये थी परन्तु इसका पोषण हो रहा है। इससे अनेक सामाजिक हानियाँ हुई हैं हो रही हैं। परमात्मा द्वारा बनाया गया मनुष्य समाज इस जन्मना जाति व्यवस्था से विघटित हो गया है। इसका लाभ विधर्मियों ने उठाया है। इसी से समाज में ऊँच–नीच का भाव तथा भेदभाव उत्पन्न होते हैं। परस्पर द्वेष उत्पन्न होता है। अन्याय व शोषण होता है। समाज व देश की उन्नति में बाधायें आती हैं। अतः यह तर्कसंगत एवं विवेकपूर्ण है कि समाज की व्यवस्था जन्मना जाति पर आधारित न होकर गुण, कर्म व स्वभाव पर होनी चाहिये। वेद और वैदिक साहित्य सहित ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज ने वर्ण व्यवस्था का ही पोषण किया है तथा जन्मना–जातिवाद का विरोध किया है। ऐसा होने पर ही मनुष्य समाज में दुःख व शोक में कमी आयेगी और समाज में सुख व कल्याण की वृद्धि होगी।

मनुष्य का जन्म जीवात्मा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये होता है। जीवात्मा का चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। मोक्ष का अर्थ दुःखों की सर्वथा निवृत्ति होती है। दुःख के कारण पर विचार करें तो इसका कारण जन्म व मृत्यु सिद्ध होता है। यदि हमारा जन्म ही न हो तो फिर जीवात्मा को दुःख नहीं होगा। इस जन्म–मरण से छूटने का एक ही उपाय है कि जीवात्मा को इस जन्म–मरण से छुट्टी अर्थात मोक्ष प्राप्त हो जाये। शास्त्रों ने मोक्ष के साधन व उपाय बताये हैं। यजुर्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि ईश्वर को जान लेने पर ही मनुष्य मृत्यु को पार कर सकता है। मृत्यु से दूर हो जाने का अर्थ है कि जन्म व मृत्यु से भी मुक्त होना। इसके लिये ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना होगा। यह ज्ञान वेद सहित ऋषियों के ग्रन्थों उपनिषद, दर्शन, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों से होता है। अतः इनका अध्ययन करने से मनुष्य दुःख के कारणों व इससे मुक्त होने के साधनों को जानकर व उनका आचरण कर दुःखों से मुक्त हो सकता है।

मनुष्य का जीवात्मा आकार में परमाणु के तुल्य, चेतन, एकदेशी, ससीम, जन्म–मरणधर्मा तथा अल्पज्ञ होता है। मनुष्य को स्वाभाविक ज्ञान तो परमात्मा से प्राप्त है परन्तु उसे विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिये माता–पिता, आचार्य, शास्त्र आदि की आवश्यकता पड़ती है। मनुष्य जीवन में धर्म का ज्ञान व उसका पालन आवश्यक है। धर्म उसे कहते हैं जिसके ज्ञान व पालन से मनुष्य का सांसारिक जीवन तथा परलोक दोनों उन्नत व सफलता को प्राप्त होते हैं। धर्म के दस लक्षण प्रायः सभी को ज्ञात हैं। धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध यह धर्म के दस लक्षण हैं। इनका पालन सभी मनुष्यों को करना चाहिये। इससे जीवन में लाभ होता है और सांसारिक जीवन में भी सफलता मिलती है। व्यवसाय आदि विषयक ज्ञान के साथ विद्या पढ़कर मनुष्य को अर्थ प्राप्ति के लिये भी पुरुषार्थ करना होता है। इसके लिये ऋषि कार्य के अतिरिक्त अध्यापन, उपदेश, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, सेना, पुलिस, शासन, व्यापार आदि अनेक क्षेत्रों में मनुष्य अपनी सेवायें दे सकता है। इसके लिये भी कुछ अध्ययन व योग्यता प्राप्त करनी होती है। इसे प्राप्त कर मनुष्य को आजीविका हेतु अपनी योग्यता के अनुसार काम मिल जाता है। यदि मनुष्य में किसी कार्य का अच्छा ज्ञान है और वह स्वस्थ व बलवान है तथा उसका आचरण व चरित्र उत्तम है तो फिर वह जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

हम महापुरुषों के जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें उनमें ज्ञान, बल तथा आचरण के गुण ही प्रमुख दिखाई देते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी, योगेश्वर कृष्ण, धनुर्धारी अर्जुन, आचार्य चाणक्य, ऋषि दयानन्द जी, सरदार पटेल, स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि में हमें ज्ञान व अनुभव के साथ उनकी देश व समाज के प्रति भक्ति व निष्ठा सहित आत्म विश्वास, ईश्वर विश्वास तथा दृढ़ इच्छा शक्ति व उसके अनुरूप आचरण ही मुख्य प्रतीत होता है। अतः इन उदाहरणों से हमें लाभ उठाना चाहिये तथा इन सभी महापुरुषों के गुणों व आचरणों को अपनाना चाहिये। मनुष्य जीवन के लिए जितना आवश्यक अभ्युदय अर्थात् सांसारिक उन्नति है उतना ही आवश्यक निःश्रेयस व मोक्ष की प्राप्ति के लिये प्रयत्न किया जाना भी आवश्यक है। ऐसा न हो कि हम सांसारिक उन्नति में ऐसे खो जाये, जैसा कि आजकल प्रायः हो रहा है, यहाँ तक कि लोग पाप करने से भी डरते नहीं हैं, जिससे हमारा निःश्रेयस हमसे दूर चला जाये और हम भावी जीवन में नीच योनियों जहाँ दुःख ही दुःख हो, उसमें विचरण करें। यदि हम अपने चारों ओर पशु–पक्षियों व रोगियों आदि को देखकर अपने जीवन में सांसारिक जीवन के लिए पुरुषार्थ सहित निःश्रेयस के लिये ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र–यज्ञ, परोपकार, सुपात्रों को दान, वेद विद्या के प्रसार में सहायता तथा पीड़ितों की सेवा नहीं करते तो हमारा मनुष्य जीवन सफल नहीं कहा जा सकता।

हमारा सुझाव है कि सभी मनुष्य प्रतिदिन विचार करें कि क्या वह मनुष्य हैं? इसके लिये ऋषि दयानन्द जी द्वारा दी गई मनुष्य की परिभाषा पर उन्हें विचार करना चाहिये। इससे उन्हें उचित व अनुचित की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है 'मनुष्य उसी को कहना कि जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ, महाबलवान् और गुणवान् भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जाए परन्तु इस मनुष्यपनरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।'

हमने सफल जीवन में ज्ञान तथा पुरुषार्थ के महत्त्व को प्रस्तुत किया है। पुरुषार्थ में सद्कर्म और सदाचरण दोनों सम्मिलित है। हम आशा करते हैं कि पाठकों को यह लेख प्रिय होगा। इति ओ३म् शम्।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन:09412985121

☞ *पृष्ठ 05 का शेष*

यजुर्वेद में ईश्वर का स्वरूप

के चौथे अंश को भी कदापि नहीं पाता। इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए यजुर्वेद का कथन है–

सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युरेतः पुरूषादधि।
ध्वं न तिर्य्यञ्चं न मध्ये परि जग्रभत्।

यजु. 32.2

भावार्थ– हे मनुष्यो! जिसके रचने से सब काल के अवयव उत्पन्न हुए और जो ऊपर, नीचे, बीच में पीछे दूर समीप कहा नहीं जा सकता, जो सर्वत्र पूर्ण ब्रह्म है उसकी योगाभ्यास से जानकर उपासना करो। ऐसे ब्रह्म की मूर्ति कभी नहीं बन सकती है।

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम
महद्यशः।
हिरण्यगर्भ इत्येष मा मा हिꣳसीदित्येषा
यस्मान्न जात इत्येषः।

यजु:32.3

हे मनुष्यो! जिस ब्रह्म का बड़ा यशस्वी आचरण ही नामस्मरण है। जो सूर्य विद्युत आदि पदार्थों का आधार इस प्रकार वह अन्तर्यामी मुझे अपने से विलग न करे, ताड़ना न दे। इस प्रकार यह प्रार्थना और जो कभी उत्पन्न नहीं हुआ वही ब्रह्म उपासना के योग्य है, उसकी कोई मूर्ति नहीं है और न बन सकती है, अब केवल एक मंत्र उसके सर्वव्यापकत्त्व के विषय में देकर विषय को विराम देते हैं।

ईशावास्यमिदꣳसर्व यत्किं च
जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य
स्विद्धनम्।

यजु. 40.1

इस जगत् में चर अचर जो भी परिवर्तनशील है वह सब परमेश्वर से आच्छादित है। त्याग पूर्वक भोग करना चाहिए और किसी के धन का लालच नहीं करना चाहिए। इति।

73, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी
कोटा (राज.)

हमें सन्तों की बात अवश्य माननी चाहिए

● पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धांताचार्य

असंतुलित वाणी के कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। कटु वाणी के दुष्प्रभाव से बचने के लिए ही तुलसीदास जी कहते हैं, अंदर की आत्मा और बाहर का जगत, इन दोनों के मध्य वाणी ही देहरी है। अंदर और बाहर दोनों ओर अगर तुझे प्रकाश चाहिए, तो वाणी की इस देहरी पर रामनाम का बिना तेल–बाती का मणि–दीप रख दें।

आध्यात्मिक महापुरुषों ने आम लोगों के सामने हमेशा **'सत्यं वद'** के ही विचार प्रस्तुत किए हैं। इस पर प्रकाश डालते हुए मनु ने कहा है कि मनुष्य के सारे व्यवहार वाणी पर ही अवलंबित होते हैं। इसलिए जिसने इस वाणी को चुरा लिया यानी अपनी वाणी पर नियंत्रण नहीं रखा, उसने सब प्रकार की चोरी अर्थात् सभी प्रकार की गलती एक साथ की।

ईश्वर ने मनुष्य को सबसे बड़ी नेमत दी है वाणी की। यह मनुष्य के चिंतन का फलित है और उसका साधन भी। चिंतन के बगैर वाणी नहीं और वाणी के बगैर चिंतन संभव नहीं है। चिंतन और वाणी के बिना मनुष्य का अस्तित्व संभव नहीं है।

मनुष्य के रोजमर्रा के जीवन में कई समस्याएँ होती हैं। यदि ध्यान दिया जाए, तो कई सारी समस्याओं का समाधान वाणी के संयम और उसके सदुपयोग में निकल सकता है।

मनुष्य के सारे चिंतनशास्त्र वाणी पर आधारित हैं। आध्यात्मिक दर्शन का सारा प्रयास विचारों को वाणी में ठीक से पेश करने के लिए होता है। वाणी विचार का शरीर ही है। कोई खास विचार किसी खास शब्द में ही समाता है। यदि हम वाणी के साथ विचार का तालमेल नहीं बिठाते हैं, तो अलग–अलग तरह की कई गलतियाँ हमारे सामने आने लगती हैं। इसलिए गंभीर चिंतन करनेवाले चिंतक निश्चित वाणी की खोज करते रहते हैं। पतंजलि के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने चित्त शुद्धि के लिए योग–सूत्र लिखे, शरीर शुद्धि के लिए वैद्यक लिखा और वाक शुद्धि के लिए व्याकरण महाभाष्य लिखा। महत्त्वपूर्ण यह है कि व्याकरण का उद्देश्य वाणी की शुद्धि करना माना गया है। भक्ति मार्ग हमें यह शिक्षा देता है कि वाणी से हरिनाम लेते रहना चाहिए। शरीर संसार में काम भले ही करता रहे, किंतु वाणी में संसार न हो। वाणी का मन पर गहरा संस्कार पड़ता रहता है। कोई व्यक्ति अगर सुंदर भजन सुनकर सो जाता है तो सवेरे उठते ही उसे बराबर वही भजन अपने–आप याद आता रहता है। भजन का नाद नींद में भी, मन में गूँजता रहता है।

वाणी से मित्रता भी की जा सकती है और वैर भी। वाणी का वैर जितना टिकता है, उतना शास्त्रों का भी नहीं टिकता। यदि आपने किसी व्यक्ति को उसकी इच्छा के अनुसार सब कुछ प्रदान कर दिया और साथ ही कड़वे वचन का भी प्रयोग कर दिया, तो आपका सारा किया–धरा काम भी समाप्त मान लिया जाता है। इसलिए सारे विश्व से मैत्री की इच्छा रखनेवाले विश्वामित्र की प्रार्थना है– **अमृतं मे आसन** यानी मेरी वाणी में अमृत हो। अक्सर देखा जाता है कि उतावले लोग कटु बोलते हैं। जो लोग लगनशील व परिश्रमी होते हैं, वे भी उतावलेपन में कटु बोल जाते हैं। फिर काम सिद्ध हो जाने के बाद सामान्य हो जाते हैं। यह सही नहीं है। हर परिस्थिति में हमारी वाणी अप्रभावित रहनी चाहिए।

मधुरता सत्य का अनुपान है और मितता उसका पथ्य है। जिसे हम सम्यक वाणी कहते हैं वह सत्य, मित और मधुर होती है और वही परिणामकारक भी होती है। समाज का हित किस बात में है, यह समझना कठिन भी हो सकता है, परंतु सम्यक वाणी से ही वह सधेगा, यह किसी भी आदमी के लिए समझना कठिन नहीं होना चाहिए। समाज हित के नाम पर अपनी वाणी दूषित न करें। इन दिनों सभ्य वाणी दुर्लभ हो गई है। सभ्य वाणी को खोकर सुलभ साधनों की प्राप्ति करना, कवि की भाषा में कहें तो नेत्र बेचकर चित्र खरीदने के समान है। मानव की महिमा केवल सुलभतम साधनों के संपादन में ही नहीं, अपितु उनको प्राप्त करने, उनका कुशलतम उपयोग करने में है।

वाणी पर संयम चित्त की एकाग्रता से आ सकता है। चित्त की एकाग्रता संगीत सुनने में, संकीर्तन में नहीं होगी, उसकी कसौटी ध्यान में होगी। अक्सर हम ध्यान के लिए सब काम छोड़कर शांत बैठते हैं। तब पता चलता है कि चित्त की कैसी अवस्था है। चित्त की चंचलता की परीक्षा के लिए ध्यान जितना उपयोगी है, उतना दूसरा कोई साधान उपयोगी नहीं है।

ध्यान के समय चित्त इसलिए एकाग्र नहीं होता, क्योंकि उसे आदेश मिलता है–चुप बैठो। चुप बैठो का आदेश मिलता है, तो चित्त दौड़ने लगता है। व्यक्ति का ध्यान अच्छी जगह भी जा सकता है और गंदी जगह भी। दोनों में ध्यान में बाधा आई, चित्त पर अंकुश नहीं रहा। चित्त पर अंकुश रहता है या नहीं, यह देखना हो तो साधक के लिए ध्यान ही कसौटी है। दूसरी कसौटी नहीं। ध्यान के समय मन यदि इधर–उधर दौड़ता है, तो ध्यान सधता नहीं है। इससे एक लाभ यह होता है कि मन कहाँ–कहाँ गया, यह मालूम चल जाता है। इसके बाद हम मन को नियंत्रित करते हैं। उसे साधते हैं।

आर्य सदन बहीन,
जनपद पलवल (हरियाणा)
मो. 9813845774

☞ *पृष्ठ 04 का शेष*

वरुण की गौ

उदकसंघातः–स्कन्दस्वामी, निरू. 5–14। इस पृथिवीरूपी कामधेनु गौ को वशिष्ठ अर्थात् इसके चारों ओर फैले हुए जलसमूह के पुत्र–रूप सैकड़ों स्तरों को छिन्न–भिन्न कर उनके मध्य में से सूर्य–रूप विश्वामित्र बाहर निकालता है (पृथिवी के उत्पत्तिकाल में चारों ओर जल फैले हुए पड़े थे,सूर्य ने *जलों (वशिष्ठ–जलसमूह)* को छिन्न–भिन्न करके पृथिवी को बाहर निकाल लिया। एक बार वशिष्ठ के शत–पुत्रों का हनन और फिर पाँच बार वशिष्ठ द्वारा आत्म–हत्या किया जाना ये छः ऋतुएँ हैं। 1. सैकड़ों जलदलों के नष्ट हो जाने से शरद्–ऋतु 2. पर्वतकूट पर जा गिरा तो रूई (हिमरूप बर्फ के रूप में रहा) हेमन्त–ऋतु 3. तीसरी बार अग्नि में पड़ा तो बर्फ पिघली...शिशिर–ऋतु 4. फिर वह जल समुद्र में गिरना आरंभ हुआ–वसन्त–ऋतु प्रवृत्त हुआ 5. पाँचवीं बार भापरूप में फेंका गया...ग्रीष्म–ऋतु 6. बादल में जाकर जल शतधा बिखर गया ...वर्षा–ऋतु।

बृ.उप. के इस अलंकार में गौ पृथिवी है तथा स्वर्गगामी अश्व यह संसार है। इस पर सावधानीपूर्वक आरूढ़ होने की आवश्यकता है। अश्व (गति का प्रतीक है क्योंकि संसार भी गतिमान् है। उपनिषद् के अनुसार इस घोड़े का सिर–'उषा' है, चक्षु 'सूर्य' है, प्राण 'वायु' है, मुख–समस्त विश्व में व्याप्त 'अग्नि' है, आत्मा–'संवत्सर' है, पीठ (पृष्ठभाग–अधिक शक्तिशाली होता है इसलिए कहा जाता है कि घोड़े की पिछाड़ी नहीं लाँघना चाहिए) –'द्युलोक', पेट–'अन्तरिक्ष', पसवाड़े (एक ओर की पसलियाँ) – 'दिशाएँ', दूसरी ओर की पसलियाँ–'कोण–दिशाएँ' हैं, हृदयदण्डादि –'छः ऋतुएँ' हैं, अंगों के जोड़–'मास,अर्धमास और पक्ष', पैर–'दिन–रात', हड्डियाँ–'नक्षत्र–तारे' तथा आत्मा–'संवत्सर' है। (आगे इस अश्व नाड़ियों, रोमों, बालों आदि का भी प्रतीकात्मक विवेचन उपनिषद् में है) हमे तो यह देखना है कि इस घोड़े पर चढ़कर कैसे अपनी सही मंजिल तक पहुँचें।

उपनिषद् में इस संसार–रूपी घोड़े पर चढ़ने वाले अपनी–अपनी योग्यतानुसार असुर,गन्धर्व, मनुष्य और देव चार प्रकार के बताए गए हैं। संसाररूपी घोड़ा तो सबके लिए एक जैसा ही है मगर कोई इस पर चढ़कर नरक अर्थात् दुःख की स्थिति में पहुँच जाता है और कोई स्वर्ग अर्थात् सुख की स्थिति को प्राप्त कर लेता है। पहला प्रमादी जन मद्यपान करके अन्धा होकर इस अश्व को चलाता है और अन्य लोगों को कुचलता चला जाता है तथा उसके अपने लिए भी वह अश्व दुर्घटना आदि दुःख का कारण बन जाता है। दूसरा उद्देश्यहीन व्यक्ति यूँ ही जंगलों में ही घोड़े को घुमाता फिरता है... अनेक प्रकार झाड़–झंखाड़ों में उलझकर जीवन बर्बाद कर लेता है। तीसरा व्यक्ति अश्व का प्रयोग नगर की चहल–पहल, खेल–तमाशों को देखने के लिए करता है और चौथा परमात्मा की प्रकृति के अनुपम दृश्यों को देखता हुआ उनका उपयोग करता है तथा परमात्मा के अद्भुत सामर्थ्यादि की प्रशंसा एवं धन्यवाद करता है। इस प्रकार इस अश्व पर असुर 'अर्वा' अर्थात् दूसरों का अहित, हिंसा करने के लिए इस पर बैठता है, गन्धर्व 'वाजी' अर्थात् भोग–विलास करने के लिए इस पर बैठता है, मनुष्य 'अश्व' अर्थात् गतिवान् बनने के लिए इस पर बैठता है और देव 'हय' अर्थात् सांसारिक भौतिक भोगों को त्याज्य समझकर इस पर बैठता है।

1. **असुर**–नाहक ही दूसरों को दुःखी करने वाला व्यक्ति असुर है। अपने स्वार्थ में डूबे हुए इस व्यक्ति, असुर के लिए यह स्वर्गगामी अश्व–अर्वाःअसुरान्, असुरों के लिए यह 'अर्वा' के रूप में हिंसावृत्ति वाला बन जाता है अर्थात् वह (अर्व हिंसायाम्–उपनिषद्) इस पर सवार होकर दूसरों का अहित ही करता है तथा इस प्रकार स्वयं अपना भी अहित ही करता है....
2. **गन्धर्व**–गन्धर्वों के लिए यह अश्व–बाजी गन्धर्वाः, 'वाजी', भोग–विलासरत तथा चंचल मन वाला बन जाता है। 'स्त्रीकामावयी वै गन्धर्वाः' अनेक प्रकार की कामनाएं, कामनाओं का दास, शारीरिक अर्थात् इन्द्रियों के सुख के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई नहीं देता है...
3. **मनुष्य**–मनुष्यों के लिए यह–अश्वो मनुष्यानः, अश्व गतिवान् बन जाता है, वह मननशील होकर इसपर सवार होता है।
4. देव–देवों के लिए यह अश्व–**'हयो भूत्वा देवानाम्'**, हय अर्थात् 'हि प्रेण' ईश्वर के प्रति प्रेरणा देने वाला तथा ग्लानि–रूप वैराग्य का रूप बन जाता है।

महर्षि दयानन्द धाम,
महादेव,सुन्दरनगर, हि.प्र.–175018,

पत्र/कविता

तीन तलाकः तीन टांग की कुर्सी

तीन तलाक के विधेयक को लोकसभा ने दुबारा पास कर दिया है। ज्यादातर दलों ने इसका बहिष्कार किया। पिछले साल वह राज्यसभा में पिट गया था। सरकार ने इसमें कई जरुरी संशोधन कर दिए। अब भी यह विधेयक तीन टांग की कुर्सी बना हुआ है।

इस तीन तलाक कानून में यह प्रावधान अभी तक बना हुआ है कि जिस मियां ने अपनी बीवी को तीन तलाक बोला, वह तुरंत जेल की हवा खाएगा लेकिन कोई पूछे कि वह बीवी और वे बच्चे क्या खाएंगे? उनके भरण–पोषण की इस कानून में क्या व्यवस्था है? और तीन साल की जेल? इसका क्या मतलब है? मामला है, दीवानी और सजा है, फौजदारी! क्या खूब? तीन तलाक गैर–कानूनी है, इसीलिए मियां को बीवी का मियां ही बने रहना पड़ेगा लेकिन बीवी घर में रहेगी और मियां जेल में! ये तो कानून का मज़ाक है। इसका मतलब यह नहीं कि तीन तलाक की कुप्रथा खत्म नहीं होनी चाहिए। जरुर होनी चाहिए।

सरकार को बधाई कि उसने यह पहल की लेकिन असली सवाल यह है कि यह इतने पुण्य का काम है और इस पर संसद में दंगल क्यों हो? सर्वसम्मति क्यों नहीं? इसीलिए जब पहली बार यह विधेयक गिरा तो सरकार ने अध्यादेश जारी कर दिया था। उसने जानबूझ कर साल भर खो दिया। इस बीच यह विधेयक यदि संसद की प्रवर समिति के पास चला जाता तो यह सचमुच एक सार्थक कानून बन जाता और यह सर्वसम्मति से पारित हो जाता। सरकार की पगड़ी में एक नया मोरपंख लग जाता।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
dr.vaidik@gmail.com

****

आयुर्वेद का चमत्कार

"स्वयं अनुभव कर के देखा कि यदि 'चाय, काफी, अण्डा, माँस, मछली, शराब, रिफाइन, एल्युमीनियम पात्र, प्रिसरेवेटिव, सूर्योदय पीछे सोना व सूर्यास्त पीछे देर से खाना छोड़ इस विधि को अपना सदा स्वस्थ रहें।" 'सूर्य से पूर्व उठ' कोसा जल पी, सैर शौच जा व्यायाम प्राणायाम करें। स्नान से पूर्व, तिलतेल नाक, सिर, नाभि, घुटने, पैर तली अंगूठे में तेल लगाएं। दांतो को रोगमुक्त करने हेतु कपड़ छान नमक को सरसों तेल में मिला अंगुली से मालिश कर कुछ देर पीछे कुल्ला करें।

आचार्य आर्य नरेश
उद्गीथ स्थली हिमाचल प्रदेश

****

गणतन्त्र

रहे गुलामी में हम सारे जिस दिन के मोहताज।
गणतन्त्र का दिन वह सुहाना आया है फिर आज।।

दयानन्द ने लहर चलाई अपने देश में अपना राज।
आर्य जाति के वीरों ने रख ली अपने देश की लाज।।

ख़ून शहीदों का रंग लाया, सुधरे सारे बिगड़े काज।
शक्तिशाली हो कर उभरा, अपना पिछड़ा हुआ समाज।।

देशवासियों! आओ मनाएँ गणतन्त्र का पर्व यह आज।
बने अपना यह देश प्यारा सारे देशों का सिरताज।।

अपना प्यारा देश महान्
जय भारत– जय हिन्दुस्तान

वेद प्रकाश शर्मा धारीवाल
103 अकुर–बी, हालर,
वलसाड, गुजरात – 396001

व्यंग्य

गणतंत्र के पुजारी

नेता मंत्री नाम हमारे,
नित तू आ तू जा करते हैं।
हम हैं गणतंत्र के पुजारी,
कुर्सी की पूजा करते हैं।।
तुमने हमको वोट दिया,
हमने कंबल कोट दिया।
तुमने हमको सत्ता सौंपी,
हमने चकमा चोट दिया।।
अभिनय में हमारा पानी,
काजोल तनूजा भरते हैं।
हम हैं गणतंत्र के पुजारी,
कुर्सी की पूजा करते है।।
सोते 'सपा' सदस्य होकर,
उठते हैं 'कांग्रेसी' बनकर।
'भाजपा' संग पिकनिक करते,
'जद' को कोसते जी भरकर।।
गिरगिट हमको नाम दिया,
उपयोग खरबूजा करते हैं।
हम हैं गणतंत्र के पुजारी,
कुर्सी की पूजा करते है।।
जन प्रतिनिधि बन जाने पर,
कीर्त्तन पाठ यज्ञ करते।
तुरन्त फुरत किसी जादू से,
कोठी बंगला भवन बनते।।
पब्लिक हम पर जाँच बिठाती,
तब तिकड़म दूजा रचते हैं।
हम हैं गणतंत्र के पुजारी,
कुर्सी की पूजा करते है।।
सौगंध भगवान की खाते,
बसी बस्तियाँ उजाड़ आते।
पीढ़ियों का धन संग्रह कर,
बस कुछ रोज़ तिहाड़ जाते।।
देशभक्ति जाए भाड़ में,
राष्ट्र को भूंजा करते हैं।
हम हैं गणतंत्र के पुजारी,
कुर्सी की पूजा करते हैं।।
महंगाई से नज़र चुराते,
प्रगति की बात दोहराते।
स्वच्छ शासन का नारा दे,
घोटलों से जुगत भिड़ाते।।
भाषण देते शाकाहारी,
खुद मुँह में चूजा रखते हैं।
हम हैं गणतंत्र के पुजारी,
कुर्सी की पूजा करते हैं।।
बगुला भक्ति प्यार करेंगे,
धर्म की तकरार करेंगे।
राम रहीम यीशू नानक,
सबका बेड़ा पार करेंगे।।
उपदेश के बोल हमारे,
टी.बी. पर गूंजा करते हैं।
हम हैं गणतंत्र के पुजारी,
कुर्सी की पूजा करते हैं।।

दिलचस्प
म.न. ई– 191, सेक्टर–1
बीकानेर–334003
मो. 9413052122

महर्षि दयानन्द शिक्षण केंद्र झज्जर में यज्ञ का आयोजन

महर्षि दयानंद शिक्षण केंद्र झज्जर में यज्ञ, भजन, प्रवचन व अभिनंदन समारोह में श्री विजय आर्य पानीपत यज्ञ के ब्रह्मा रहे तथा श्रीमती मामकोर एवं महाशय रतिराम मुख्य यजमान रहे। जिला झज्जर की समस्त आर्य समाज के प्रधान श्री ऋषि पाल खेड़का गुज्जर कार्यक्रम के अध्यक्ष रहे । राजकीय स्नातकोतर कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल डॉ. एच.एस. यादव ने बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, वार्तालाप ,आर्थिक, धैर्य आदि बलों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आत्मिक बल सबसे महान है। प्रत्येक बल का अपना महत्त्व है। आत्मिक बल निराकार ईश्वर की उपासना और उसकी आज्ञा का पालन करने से आता है। इस अवसर पर श्री ऋषि पाल आर्य ने बताया कि ईश्वर जीव तथा प्रकृति तीनों अलग–अलग अनादि पदार्थ है। ईश्वर सत्य ज्ञान और जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल देता है। महाशय रतिराम ने अपनी हीरक जयंती पर 251 कुंडीय हवन महोत्सव महान लॉन्स सिलानी गेट झज्जर में निशुल्क यजमान बनने की प्रार्थना की। आर्य समाज के प्रधान द्वारका प्रसाद, सूर्यप्रकाश, सत्यदेव, उधम सिंह, पंडित जय भगवान आर्य, चमन लाल यादव, श्री भगवान सिंह, मास्टर पन सिंह तथा अध्यापिका सुमित्रा व कांता देवी ने मधुर भजन रखें । वैदिक धर्म का संक्षिप्त परिचय कंठस्थ याद करने वाले मनस्वी, अनमोल, हर्षिता, जैसमिन, खुशी, दीप्ति आदि होनहार विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। ईश्वर की उपासना से आत्मिक बल की प्राप्ति।

मकर सक्रांति पर आर्य समाज शकरपुर ने कराया यज्ञ

मकर संक्रांति महापर्व के अवसर पर आर्य समाज शकरपुर के यशस्वी मंत्री श्री पतराम त्यागी के नेतृत्त्व में शकरपुर में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके यजमान निगम पार्षद शकरपुर श्रीमती नीतू त्रिपाठी बने।

इस अवसर पर पुरोहित पंडित ब्रजपाल शास्त्री ने यज्ञ को पूर्ण कराकर मकर सक्रांति पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

श्री पतराम त्यागी ने भी उपस्थित जनसमूह को मकर सक्रांति के वैदिक स्वरूप का विस्तार से वर्णन किया।

यज्ञ के पश्चात प्रसाद वितरण श्रीमती नीतू त्रिपाठी निगम पार्षद द्वारा किया गया इस यज्ञ में आर.डब्ल्यू.ए. के पदाधिकारी डब्ल्यू.ए. ब्लाक के प्रधान श्री आर.के. शर्मा, चेयरमैन श्री रंजीत सिंह, कार्यालय सचिव एस एल मिश्रा, कार्यकारिणीं सदस्य अनिल अग्रवाल, रविदत्त त्यागी आर. डब्ल्यू.ए. प्रधान स्कूल ब्लाक पार्ट–2, उपाध्याय ब्लॉक के महासचिव एवं मीडिया संयोजक विधिक एवं मानवाधिकार विभाग दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी अशोक शर्मा, अजय शर्मा, वेदप्रकाश वानप्रस्थी, राकेश शर्मा, अनुज त्यागी, दीपक त्यागी, नंद कुमार वर्मा, श्री कृष्ण मंदिर के वरिष्ठ उपप्रधान रामेश्वर त्यागी तथा अन्य गणमान्य क्षेत्र के प्रबुद्ध लोग यज्ञ में शामिल होकर आहुति दी और कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की।

॥ ओ३म् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला–मौरबी–363650 (गुजरात) दूरभाषः (02822) 287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 03, 04, 05 मार्च 2019 (रविवार, सोमवार, मंगलवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञः 26 फरवरी से 04 मार्च 2019 तक

ब्रह्माः आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीतः श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) श्री जगत वर्मा (जालन्धर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्षः

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् ट्रस्टी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा)

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

बोधोत्सव

सोमवार दिनांक 04.03.2019

विशिष्ट अतिथिः श्री डॉ. रमेश आर्य, उपप्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति

श्री एस.के. शर्मा, निदेशक डी.ए.वी. पब्लिकेशन एवं मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

कार्यक्रम में आमन्त्रित विद्वान्

डॉ. महावीर अग्रवाल (वाईस चांसलर, पतंजलि विश्वविद्यालय), महात्मा चैतन्य मुनि (हिमाचल प्रदेश), माता सत्यप्रिया (हिमाचल प्रदेश), स्वामी आर्येशानन्द (माउन्ट आबू), स्वामी शान्तानन्द (गुजरात), स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती (यमुनानगर), श्री मोहन भाई कुण्डारिया (स्थानीय सांसद), श्री बल्लभभाई कथीरिया (राजकोट), श्री ललित भाई कगथरा (स्थानीय विधायक), श्री बृजेश मेरजा (विधायक मौरबी), एवं इसके अतिरिक्त देश विदेश से अनेकों विद्वान् एवं सन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद, चैक, ड्राफ्ट, मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'' के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग,** नई दिल्ली–110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला–मौरबी–363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0466500** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना **मो. 09560688950** पर देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या, उपप्रधाना

रामनाथ सहगल, मन्त्री

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 23/24-01-2019

बी.डी. डी.ए.वी. में मनाया गया महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस

महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस आर्य समाज मंदिर धर्मशाला में मनाया गया, जिसमें आर्य समाज के प्रधान–अरुणपुरी सपत्नीक मुख्य यजमान बनें जिसमें आर्य युवा समाज के सदस्यों ने भी यज्ञ में भाग लिया।

आर्य समाज के पुरोहित मुकेश शास्त्री ने स्वामी दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अज्ञानता व अशिक्षा के कारण लोग धर्म भ्रष्ट हो रहे हैं। लोग अन्धविश्वासों के गर्त में आँख बन्द करके चले जाते हैं। महर्षि दयानन्द पाखण्ड, अज्ञानता, अशिक्षा, अन्धविश्वास के प्रति यदि समाज में जागृति फैलायी। उनकी शिक्षा उनके विचार समय–समय पर हमें सत्मार्ग की और चलने को प्रेरित करते हैं।

हमारा यह कर्तव्य है, कि हम उनके विचारों को समाज के कोने–कोने तक लेकर जायें। स्वामी जी अपना नश्वर शरीर, त्यागकर भी अमर है। स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा लेकर देश–धर्म और मानव मात्र के लिए अपना जीवन लगायें, यही स्वामी जी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होंगी। आर्य युवा समाज के सदस्यों ने वैदिक भजनों की प्रस्तुति देकर कार्यक्रम को चार चाँद लगा दिए, तत्पश्चात शांति–पाठ के बाद यज्ञ शेष वितरित किया गया।

एल.आर.एस. डी.ए.वी. अबोहर में आयोजित किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रम

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय भारत सरकार के तत्त्वावधान में पेट्रोलियम संरक्षण अनुसंधान संघ तेल संरक्षण को राष्ट्रीय आंदोलन बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। इस आंदोलन को प्रभावी रूप से लागू करने और लोगों को जागृत करने के उद्देश्य से देश भर के स्कूली छात्रों के लिए विभिन्न साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

इसी श्रृंखला में एल.आर.एस. डीएवी सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर के विद्यार्थियों ने पेंटिंग के जूनियर व सीनियर वर्ग और और निबंध लेखन के हिंदी, पंजाबी और अंग्रेजी भाषा वर्ग में भाग लिया।

प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा ने बताया कि पेंटिंग प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में पाँचवी कक्षा के मास्टर हर्ष गुप्ता व सातवीं कक्षा की कुमारी रचना कंबोज की पेंटिंग और सीनियर वर्ग में से आठवीं कक्षा के मास्टर सोहम चट्टोपाध्याय व दसवीं कक्षा के मास्टर तनिश की पेंटिग सर्वश्रेष्ठ घोषित की गई।

अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता में आठवीं कक्षा के मास्टर सक्षम गर्ग और मास्टर उदय मिढ़ा का निबंध हिंदी निबंध प्रतियोगिता में से दसवीं कक्षा की कुमारी इशिता और कुमारी रिदिमा का निबंध और पंजाबी निबंध प्रतियोगिता में दसवीं कक्षा की कुमारी सुनाज़ और कुमारी सोनू सोखल का निबंध सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। सभी प्रतियोगियों को पी.सी.आर.ए. द्वारा प्रमाण पत्रों व उपहारों से सम्मानित किया गया।

डी.ए.वी. सोलापुर में हैंडबॉल प्रतियोगिता का आयोजन

Maharshi Dayanand Saraswati Mandir
West Zone Inter University HandBall (Men) Tournament 2018-19
Solapur University, Solapur
D.B.F. Dayanand College of Arts & Science, Solapur.
Inaugural Function
Valediction Function
CHAMPIONS

सोलापुर विश्व विद्यालय एवं दयानन्द कला व शास्त्र महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में पश्चिम विभागीय आंतर विश्व विद्यालयीन हैंडबॉल प्रतियोगिता डी.ए.वी. सोलापूर के विशाल ग्राऊंड में सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता का उद्‌घाटन मुख्य अतिथि सोलापुर विश्व विद्यालय के कुलगुरु श्रीमती डॉ. मृणालिनी फडणवीस के करकमलों द्वारा ज्योति प्रज्ज्वलित करके हुआ।

इस हैंडबॉल प्रतियोगिता में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र राज्यों के विश्वविद्यालय के लगभग 58 टीम के 1200 खिलाड़ी अपने टीम मैनेजर के साथ सम्मिलित हुए। इस चार दिवसीय हैंडबॉल प्रतियोगिता में छात्रों ने काफी उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रि. डॉ. विजयकुमार उबाले ने बच्चों को शुभकामनाएँ दी। इस टुर्नामेंट में सोलापुर विश्व विद्यालय की टीम ने अपने खेल का शानदार प्रदर्शन करके जनरल चॅम्पियनशीप ट्राफी का खिताब जीता।

डी.ए.वी. के इस शानदार तरीके से आयोजित टुर्नामेंट की गतिविधि से कुलगुरु डॉ. मृणालिनी फडणवीस ने हर्षोल्हास के साथ कहा की अगली बार राष्ट्रीय स्तर पर होनेवाली प्रतियोगिता का आयोजन सोलापुर विश्व विद्यालय के माध्यम से किया जाएगा। इस प्रतियोगिता का समारोप मा. डॉ. किरण देशमुख, के अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस प्रतियोगिता के आयोजन के लिए स्थानीय सचिव परम आदरणीय श्री महेश चोपड़ा जी के बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**